

११००

संस्कृत शिल्पी कृतो कवि कि शारंगदेव.

- २००० श्रीरामायण भाग.
- २००० कवे कालु कालो कथा.
- २००० कवीकृत मूलकाव्य
- २००० इन्द्राक्षरमेव एवम प्रेरितिका
- २००० काल कृतो का कृष्ण एवमीन्द्र
- ३००० १००० लक्षण संक्षेप भाग १ पौ. भा.
- २००० लक्षण संक्षेप भाग २ वि. भा.
- २००० लक्षण संक्षेप भाग ३
- २००० काल कृतो
- २००० कालकृत कविनी
- २००० प्रथमा का भाग
- २००० द्वितीया का भाग
- २००० तृतीया का भाग १-४
- २००० चतुर्थी का भाग १-४
- २००० पंचमी का भाग १-४
- २००० षष्ठी का भाग १-४
- २००० सप्तमी का भाग १-४
- २००० अष्टमी का भाग १-४
- २००० नवमी का भाग १-४
- २००० दशमी का भाग १-४
- २००० एकादशी का भाग १-४
- २००० द्वादशी का भाग १-४
- २००० त्रयोदशी का भाग १-४
- २००० चतुर्दशी का भाग १-४
- २००० पौर्णमासी का भाग १-४

कार्य काल ११

११००



नाम	जाटी	पहली	द्वितीया	तृतीया	चतुर्थी	पंचमी	षष्ठी	सप्तमी
गणेश	१	१	१	१	१	१	१	१
गणेश	१	१	१	१	१	१	१	१
गणेश	१	१	१	१	१	१	१	१
गणेश	१	१	१	१	१	१	१	१
गणेश	१	१	१	१	१	१	१	१
गणेश	१	१	१	१	१	१	१	१
गणेश	१	१	१	१	१	१	१	१
गणेश	१	१	१	१	१	१	१	१
गणेश	१	१	१	१	१	१	१	१
गणेश	१	१	१	१	१	१	१	१

यथाशक्तं मयं यथाशक्तं १७५ पत्तराज ७०२ सचिराज २८०८ सख्दराज
 १२०३० होते हैं

मार्गमन्त्रांगे १। राजउर्ध्वे जावे तव पहला दुसरा देवलोक आता है लिस्से आ
 दो राजउर्ध्वे जावे तव एक राजविस्तार है वहाँसे आदो राजउर्ध्वे जावे तव १॥ राजवि-
 स्तार है वहाँसे पाव राज जावे तव २ राजविस्तार वहाँसे पाव राज जावे तव २॥
 राजविस्तार है वहाँ पर मुधम इशान देवलोक है।

मार्गमन्त्रांगे १। राजउर्ध्वे जावे तव पहला दुसरा देवलोक आता है लिस्से आ
 दो राजउर्ध्वे जावे तव एक राजविस्तार है वहाँसे आदो राजउर्ध्वे जावे तव १॥ राजवि-
 स्तार है वहाँसे पाव राज जावे तव २ राजविस्तार वहाँसे पाव राज जावे तव २॥
 राजविस्तार है वहाँ पर मुधम इशान देवलोक है।

वस्तुनिर्देशमें नय कि अपेक्षा अवश्य होती है, वह नय मौख्य दो प्रकारकी है. (१) निश्चयनय, (२) व्यवहारनय. जिस्मे निश्चयनयसे लोकका मध्यभाग प्रथम रत्नप्रमा नरकके अवकाश अन्तराके असंख्यातमे मागमें है. वास्ते अधोलोक संभूमितलासे साधिक सात राज है, और उर्ध्वलोक कुच्छ न्यून सात राज है तथा तीरच्छालोक जाडा १८०० योजनका है, परन्तु व्यवहारनयसे सात राज अधोलोक और सात राज उर्ध्वलोक और तीरच्छालोक उर्ध्वलोकके समल माना जाता है, वह व्यवहारनयकी अपेक्षासे ही यहापर बतलाये जावेगा.

प्रथम च्यार प्रकारके राज होते है उन्हीकों ठीक (२) ममकना.

- (१) घनराज—एक राज लंबा, एक राज चौडा, एक गज जाड हां
 (२) परतराज—एक घनराजका च्यार परतरराज होता है
 (३) मुनिराज—एक परतरराजका च्यार मुनिराज होता है.
 (४) गण्डराज—एक मुनिराजका च्यार गण्डराज होता है

अधोलोक मान गजरा जाडपणामें है पर १ ॥

लोकमे मान नरक २. १४ प्रत्येक नरक एकेकर तकि
 विष्णु परमे देतो

उर्ध्वलोकके सर्व धनराज ६३॥ परतर २५४ एनि
 १०१६ गण्डराज ४०६४ तीरस्थो लोक एक राजविस्तार-
 माला है जिम्में अगल्यातडीप समुद्र है परन्तु १८०० जोत्रनका
 ताइपणामे होनागे किमी राजकी मंग्या नहीं है.

मम्पुरगा लोकके धनराजादि संख्या.

(१) धनराज	२३२	(३) धर्मराज	३८२४
(२) धनराज	६४६	(४) गण्डराज	१४२६६

मेवं भन्ते मेवं भन्ते तमेव मद्यम् ।

इति

—

शोकटा नम्यर ७

—

—

—

—

—

—

—

—

- (७) पात्यडेद्वार (८) अन्तराद्वार (९) पात्यडेरअन्तरो
 (१०) घणोदधि० (११) घणवायु० (१२) वृणवायु०
 (१३) आकाशद्वार (१४) नरकअन्तरो० (१५) नरकावासा
 (१६) अलोकान्तरो० (१७) वलीयाद्वार (१८) क्षेत्रवेदना०
 (१९) देववेदना० (२०) धंक्रयद्वार (२१) अल्पवदूतद्वार

(१) नामद्वार—गमा वनशा शीला अजना रीठा मघा
 माघवती.

(२) गोत्रद्वार—रत्नप्रभा शार्कर० बालुकाप्रभा पंक-
 प्रभा धूमप्रभा तमप्रभा और तमतमाप्रभा ।

(३) जाडपणो—प्रत्यक नरक एकेक राजाकी जाडी है।

(४) पादलपणो—पहेली नरक एक राजविस्तारवाली
 है, दूसरी २॥ गज, तीसरी च्यार गज, चौथी पांच गज,
 पांचमी छे गज, छठी भाडाछे गज, सातमी नरक सात गज
 वे विस्तारमें है परन्तु नार्गिके नैगिया एक गजके विस्तारमें
 है उन्हीको ब्रमनाली कहा जाता है ।

५ पृथ्वीपण्डद्वार—प्रत्यक नरकको अमन्यात अमन्यात
 जोजनका है परन्तु पृथ्वीपण्ड पहली नरकका १०००००
 गजका १३०००० तीसरीका १०००० चौथीका १२००००
 पांचमीका ११००० छठीका १०६०० सातमीका १०००००
 बांजनका है.

(६) पात्यदेपात्यदे अन्तरक्षर-पेहली नरकके पात्यदे पात्यदे ११५=३३ दुतीरा ६७०० तीनरी १२७५० चौथी १६१६६३ पांचवी २५२५० छठी ५२५०० सातवी नरकके पात्यडा एक ही है.

(१०) घरोदद्विक्षर प्रत्यक नरकपण्डके निचे २०००० जी० कि घरोदद्वि पकाबन्धा हुआ पानी है.

(११) घरवायु-प्रत्यक नरकके घरोदद्विके निचे अतं-ख्यात २ जीवनके घनवायु है पकाबन्धा हुआ वायु है.

(१२) वृषवायु-प्रत्यक नरकके घरवायुके निचे अतं-ख्यात २ जीवनके वृषवायु पातला वायु है.

(१३) आकाश-प्रत्यक नरकके वृषवायुके निचे अतं-ख्यात २ जी० का आकाश है अर्थात् आकाशके आधार वृषवायु है वृषवायुके आधार घनवायु है घनवायुके आधार घनोदद्वि है घनोदद्विके आधारमे पृथ्वीपण्ड है.

(१४) नरक नरकके अन्तरा-एकेक नरकके विचमें अनंख्यात अनंख्यात जोल्लका अन्तर है.

(१५) नरकावासाद्वार-नरकावासा दो प्रकारके है
 १ अनंख्यात जीवनके बिलरवाना जिन्मे अनंख्यात तेरीया है
 २ अनंख्यात जी० जिन्मे अनंख्यात तेरीया है सब नरकावा-
 सोक पाच विभाग कर दीया जाय जिन्मे स्थार विभाग के

असंख्याता जोजनका है और एक विभाग संख्याते जोजन-
वाले है नरकावास पहली नरकमें ३० लक्ष, दुसरीमें २५ लक्ष
तीसरीमें १५ लक्ष, चौथीमें १० लक्ष, पांचवीमें ३ लक्ष,
छठीमें पांचकम लक्ष, सातमी नरकमें ५ महानरकावास है
संख्याता जोजनका नरकावासाका परिमाण जैसे कोई शीघ्र-
गतिका देवता तीन चीमटी बजावे इतनामें जम्बुद्वीपके २१
प्रदिक्षणा दे आवे इसी शीघ्रगतिसे चाले वह देवता जयन्प
१-२-३ दिन उत्क० ६ मास तक चले तो कितनेक संख्यात
जोजनके नरकावासोंका अन्त आवे और कितनेकके अन्तभी
नहीं आवे.

(१६) अलोक अन्तरा० (१७) पलीयाद्वार-अलोक
और नारकीके अन्तर है जिस्में तीन तीन प्रकारका गोल
पुठी माफ्तीक पलीया है वह यंत्रसे दंग्यो.

नरक	रत्न०	शा०	वा०	पं०	धूम०	तम०	तम
अलोकअन्तरा	१२जो.	१२३	१२३	१४	१४३	१५३	१
पलीयासंख्या	३	३	३	३	३	३	३
पयोदधि	६	६३	६३	७	७३	७३	८
रत्नबाधु	४।	४।।।	४	४।	४।।	४।।।	६
रत्नबाधु	१।।	१।।।।	१।।।।	१।।।	१।।।।	१।।।।	२

थोकडा नम्बर ३

बहुत सूत्रोंसे संग्रह.

(भुवनपतियोंके २१ द्वार.)

(१) नामद्वार	(८) चन्द्रद्वार	(१५) देवीद्वार
(२) वासाद्वार	(९) इन्द्रद्वार	(१६) परीपदा०
(३) राजधानी	(१०) सामानीक०	(१७) परिचारणा
(४) सभाद्वार	(११) लोकपाल०	(१८) वैक्यद्वार
(५) भुवनसंख्या	(१२) तावतेसका	(१९) अयाधिद्वार
(६) वर्षद्वार	(१३) आत्मरचक	(२०) सिद्धद्वार
(७) वस्त्रद्वार	(१४) अनकाद्वार	(२१) उत्पन्नद्वार

(१) नामद्वार—अमुरकुमार नागकुमार सुवर्षकुमार
विष्टुकुमार अद्रितुमार द्वीपकुमार दिशाकुमार उदद्विकुमार
वायुकुमार मन्तुमार.

(२) वासाद्वार—भुवनपति देवोक्ता निवास कहां पर
है. यह नम्रप्रभानक. १०००. लोकनकी है जिम्मे १०००
... .. लोकनकी है जिम्मे १०००
... .. लोकनकी है जिम्मे १०००
... .. लोकनकी है जिम्मे १०००

शोभनीक है इत्यादि ओर भी ६ निकायदेवोंकी राजधानी दक्षिणकी तर्फ है इसी भाषीक उत्तरदिशामें भी समझना परन्तु उत्तरदिशामें तीगच्छउत्पात पर्वत है.

(४) सभाद्वार—एकेक इन्द्रके पांच पांच सभा है (१) उत्पात सभा (२) अभिशेष सभा (३) अलंकार सभा (४) व्यवाय सभा (५) सौधर्मी सभा.

(१) उत्पात सभा—देवता उत्पन्न होनेका स्थान है.

(२) अभिशेष सभामें इन्द्रका राजअभिशेष कीया जाता है.

(३) अलंकार सभा—देवतोंके श्रृंगार करते योग वस्त्र-भूषण रहेते हैं.

(४) व्यवाय सभा—देवतोंके योग धर्मशास्त्रका पुस्तक रहेते हैं.

(५) सौधर्मी सभा—जहां जिनमन्दिर चैन्यम्यंभ शस्त्रकोष आदि है ओर सुधर्म सभामें देवतोंके इन्माफ कीया जाता है इत्यादि.

५. भुवनमंग्याद्वार-भुवनपतियोंके भुवन ७७२०००००० है। नम्बर ७-६-०००० भुवन दक्षिणदिशामें है ३६६००००० उत्तरकी तर्फ है. देखो चित्रमे--

१. भ्रान्तपति.

दक्षिणदिशा.

उत्तरदिशा.

कुलभुवन.

यमरा०

३४

लघु

३०

लघु

६४ लघु

नीगुरु

४४

"

४०

"

८४ "

भरणी०

३८

"

३४

"

७२ "

११५३

४०

"

३६

"

७६ "

पौष३

४०

"

३६

"

७६ "

११५४

४०

"

३६

"

७६ "

१८-१११-

४०

"

३६

"

७६ "

३२१५३

४०

"

३६

"

७६ "

परान३-

४०

"

४६

"

६६ "

मनन्त०

४०

"

३६

"

७६ "

(६.) वर्ण, (७) घस्र, (८) चन्द, (९) इन्द्र.

१. अ०	रम दार	वस्र दार	चन्द दार	उगोन्द्र
२. अ०	कालो	राना	चुडासगि	वर्णोन्द्र
३. ना०	भावलो	निला	नासफला	कृताइन्द्र
४. ग०	गुवणे	धोला	गुफट	वेणुदाली "
५. रि०	राना	निला	पत्र	हरिगिह "
६. अ०	राना	निला	कलय	अपि-मानव "
७. रि०	राना	निला	गिह	वियोष्ट "
८. रि०	पटर	निला	अश	जलप्रस "
९. अ०	गुवणे	सुपंत	गत्र	अमृतचदान "
१०. प०	उयास	पांच वर्ण	मगर	वर्षजन "
११. अ०	गुवणे	सुपंत	वर्द्धमान	सहायोप "



(१७) परिचारण—भुवनपति देवोंके परिचारणा (मंधुन) पाँच प्रकारकी है यथा मनपरिचारणा रूप० शब्द. स्पर्श० कायपरिचारण—मनुष्यकी भाफीक देवांगनाके साथ भोगविलास करे इति. देखो परिचारणापद.

(१८) वैक्रयद्वार—चमरेन्द्र वैक्रयकर भुवनपति देव-देवीमें सम्पुरण जम्बुद्वीप भरदे अमंगल्यातेकी शक्ति है एवं ममानिक लोकपाल तावतीमका और देवी परन्तु लोकपाल देवीकी शक्ति मंगल्यातेद्विपकी है एवं बलेन्द्र परन्तु एक जम्बुद्विप साधिक ममकना शेष १८ इन्द्र एक जम्बुद्विप भरे और सबके मंगल्यातेद्विपकी शक्ति है देवतोंके वैक्रयका काल ३० १५ दिनका है.

(१९) अथधिद्वार—अमुरकुमारके देवता अथधिज्ञानमें ३० २५ जोवन ३० उर्ध्व मांधर्म देवलोक अथो० तीमरी नरक तीर्थ० अमंगल्याते द्वीप समुद्र शेष ६ देव ३० उर्ध्व जोतीर्षीपोंके उपरका तना अथो० पेदला नरक तीर्थ० मंगल्यातेद्विप समुद्र देखे.

(२०) मिद्वार—भुवनपतियोंमें निकल मनुष्य हो के एक समयमें १० जीवमांध ३० देवीमें निकलके एक समय ५ जीव मोघ ३०

(२१) उत्पन्न—सर्व प्राण भूत जीव सत्त्व भुवनपति देवों देवी पशु पूर्व अनन्ति अनन्तिवार उत्पन्न हूवे अर्थात् देव होनेपर भी जीवकी कुच्छ भी गरज सरे नही वास्ते हानो-धमकर आत्माको अमर बनानी चाहिये इति.

सेवंभंते सेवंभंते—तमेवसच्चम्.



थोकडा नं. ४



बहुत सूत्रसे संग्रह.



(अन्तर देवोके द्वार २१)

(१) नामद्वार	(८) चन्द्रद्वार	(१५) वैक्रयद्वार
२) वामाद्वार	(९) इन्द्रद्वार	(१६) अवधिद्वार
३) नगरद्वार	(१०) मामानीक देव	(१७) परिचारणा
४) राजधानी	(११) आन्तरिक	(१८) मुखद्वार
५) मभाद्वार	(१२) परिपटाद्वार	(१९) मित्रद्वार

(६) वर्णद्वार	(१३) देवीद्वार	(२०) भवद्वार
(७) वसुद्वार	(१४) अनिकाद्वार	(२१) उत्पन्नद्वार

(१) नामद्वार—पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरष, मोहग, गभर्व, आणपुन्य, पाणपुन्ये इशीवाइ, भुइवाइ, कंडे, महाकंडे, कोहंड, पयंगदेवा, इति.

(२) वासाद्वार—व्यंतर देव काहापर रेहते हैं ? यह रत्नप्रभा नरक जो १८०००० जोजनकी जाडपणावाली है जिस्मे एकहजार उपर और एकहजार निचे छोडनेमे मध्यमे १७८००० जोजन रहेती है इस्मे उपर जो एकहजार जोजनका पण्ड था उन्हीकों एकसो जोजन उपर और एकसो जोजन निचे छेड देनामे मध्य ८०० जोजनका पण्ड है इन्हीके अन्दर बांगमित्र आठ जनाका देवता निवाम करते हैं यथा पिशाच यावन गंधर्व और जो उपर १०० जोजनका पण्ड था जिस्मे १० जोजन उपर और दश जोजन निचे छेडकर मध्यमे ८० जोजनका पण्ड है जिस्मे आठ जनाका व्यतर देव निवाम करते हैं

३ नगद्वार—दमरुद्वारमे बनाये हुये म्थानमे तीरन्ध्र चोकमे बांगमित्र और व्यतर देवताके अमण्याने नगर हे यह

नगर असंख्याते और संख्याते जोवनके विस्तारवाले है सर्व रत्नमय है परिमाण भुवनपतियों माफ़ीक.

(४) राजधानीद्वार—वांछमित्र और व्यंतर देवोंकी राजधानीयों तीरच्छा लोकके द्वीप समुद्रोंमें है जैसे भुवनपतियोंके राजधानीका वर्णन कीया गया था उसी माफ़ीक परन्तु विस्तारमे यह राजधानी कम है प्रायः १२ हजार जोवन के विस्तारवाली है सर्व रत्नमय है.

(५) नभाद्वार—एकेक इन्द्रके पांचपाच सभा है यथा (१) उत्पातसभा (२) अभिशोपसभा (३) अलंकारसभा (४) व्यवयसभा (५) सौधसभा विस्तारभुवनपतिमे देखो.

६ वरुणद्वार देवनोंका गरीश्वर वर्ण—'यद्यपि शाच मातरा माया इत्यादि न्यायोंका वर्णन किया है किनदेवोंको नला इत्यादि रत्नमय और 'वपुष्पक' वर्ण धवलो भूतदेवोंको वर्ण काला इत्यादि माफ़ीक विस्तारवाले नमस्तेन

अध्याय २ पञ्चमः सप्तमः भूतव निलावरः १२
'वपुष्पक' निलावरः मातराः सधवकं न्यायवत्

(८) चन्द्रद्वार, (९) इन्द्रद्वार.

देव.	दक्षिण इन्द्र.	उत्तर इन्द्र.	ध्वजपरचन्द्र.
शाकके दो इन्द्र	कालेन्द्र	महाकालेन्द्र	कदंबवृष
के दो इन्द्र	सुरूपेन्द्र	प्रतिरूपेन्द्र	सुलववृष
"	पूगेन्द्र	मणिभद्र "	वडवृष
मम "	मिम	महामिम	खटंगउपकर
मर "	किंमर	किंपुरा	आशोकवृष
पुष्प "	मापुरुष	महापुरुष	शम्भुवृष
रत्न "	अनिराज	महाकाय	नागवृष
पर्व "	गतिगति	गतिपश	तुंबवृष
शपुन्ये,,	मनिदिन्द्र	मामानीन्द्र	कदंबवृष
शपुन्ये,,	बाइन्द्र	विधाइन्द्र	गुलमवृष
विशादी,,	श्रुपिन्द्र	श्रुपिपाल	वडवृष
विशादी,	इषाइन्द्र	महेश्वरेन्द्र	मटम
इ	म' इ-इ	विशादी	आशाकवृष
इ	इ' इ-इ	इ' इ-इ	शम्भुवृष
इ	इ' इ-इ	मह' इ-इ	नागवृष
इ' इ-इ	इ' इ-इ	इ' इ-इ	नरवृष

जम्बुद्विप प्यंतर देव देवी का रूप वैकल्प बना शक्तों के संगम्यालेकी शक्ति है.

(१६) अरधिज्ञा—वाणमिप देव अरधिज्ञानमें ३० २५ जोजन उ० उर्ध्व जोनीपीपोंके उपरका गना अर्षो० पेहनी नरक तीर्थ० संगम्यालेद्विप समुद्र.

(१७) परिचारणाज्ञा -- सर्व देवोंके पाच प्ररुगके परिचारणा है यथा मन, रूप, शब्द, स्पर्श, और कायपरिचारणा अर्थात् मनुष्यके मास्कीक भोगरिनाश करते है.

(१८) मुराद्वार— यहा मनुष्यलोकमें कोइ मनुष्य पुत्रक अवस्थामें मनमोहन पुत्रक सुन्दर जोवन रूप लारण्यवान्में सादि कर विदेशमें द्रव्यार्थी गया था वहमें मनोइच्छत द्रव्य लाया दोनोंकी परिपक जोवन अवस्थामें अशादित सुख भोगमें उन्होंसे व्यंतर देवोंका मुरा अन्नगुण है

(१९) सिद्धद्वार वाणामिप (निकलक मनुष्यभवकर एक समयमें १० और १० गाम निकलक) तीर ॥ क समय भावु जात है

(२०) भवद्वार— वाणामिप १० अरध अरधामें भव कर तो १ २-३ उरकए पनन्त नर कर शक्त है

(२१) उपरिज्ञा— यहा वाणामिप पुत्र जोवन मन्व वाणामिप देवतो पण ॥ कद्वार नदी किन्तु पनन्ती अन्ननीशर उत्पन्न

कह गये ज़ोतीपी शिर है इन्हीका परिवार विगारद मन्दारके ज़ोतीपीयों मागीक समझना.

अद्वैतीयके अन्दर जो ज़ोतीपी है वह पर-धन्य कर्मकाहे है और धर्मण कर्मों ही कुरी मानते है उन्हीके विप्लवाके लिये ज़ोतीपी एकका थोकडा अन्द्रप्रभापी और धर्म प्रभापीके लियेमे वरन्नु सामान्यतामे यहीपर ३१ डारमे ज़ोती पीपीका थोक डा लिखा जाता है कि माधारण मनुष्यमे इन्हीका नाम डडा मक.

(१) नाथडा	(२) गतिडा	(२२) देवीडा
(२) वापडा	(२३) नाथकडा	(२३) गतिडा
(३) मन्दापी	(२४) अन्तर ..	(२४) अदिडा
४ वनी	२५ वापडा ..	२५ वैद्य ..
५ मन्दा ..	२६ मन्दा ..	२६ अर्थि ..
मन्दा ..	२७ ..	२७ अर्थि ..
४४ ..	२८ ४४ ४४ ..	४४ ..
४४ ..	२९ ४४ ४४ ..	४४ ..
४४ ..	३० ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	३१ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	३२ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	३३ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	३४ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	३५ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	३६ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	३७ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	३८ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	३९ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	४० ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	४१ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	४२ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	४३ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	४४ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	४५ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	४६ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	४७ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	४८ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	४९ ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..
४४ ..	५० ४४ ४४ ..	४४ ४४ ४४ ..

हैं सूर्यके मुकटपर सूर्यमांडलका चन्ह है एवं नक्षत्र ग्रह तार
उन्ही चन्हद्वारा वह देवता पेच्छाना जाता है.

(८) वैमानका पहूलपणा (९) वैमानका जाडपणा —

एक जोजनका ६१ भाग किजे उन्हीसे ५६ भाग चन्द्रका वैमान
पहूला है और २८ भाग जाडा है सूर्यका वैमान ४८ भागका
पहूला २४ भागका जाडा है। ग्रहका वैमान दो गाउका पहूला
एक गाउका जाडा है। नक्षत्रका वैमान एक गाउका पहूला
आदा गाउका जाडा है। ताराका वैमान आदा गाउका
पहूला पाव गाउका जाडा है सर्व स्फकट रत्नमय वैमान है.

(१०) वैमानवहान—यद्यपि जोतीपीयोंके वैमान आका-

शके आधारमें रहेते हैं अथवा वैमानके पाँद्रलोके अगुरुलघु

प्राण्य हैं वर आकाशके आधारमें रहे शक्ते हैं। तद्यपि देव

चण्डे मालकका वहुन नके निर उन्ही वैमानोंको हमेशोंके लिये

आकाशके देवोंके स्वभाव

के अनुसार इनके अन्तर्गत शान्त शान्त

के अन्तर्गत इनके अन्तर्गत इनके अन्तर्गत

के अन्तर्गत इनके अन्तर्गत इनके अन्तर्गत

के अन्तर्गत इनके अन्तर्गत इनके अन्तर्गत

के अन्तर्गत इनके अन्तर्गत इनके अन्तर्गत

के अन्तर्गत इनके अन्तर्गत इनके अन्तर्गत

के अन्तर्गत इनके अन्तर्गत इनके अन्तर्गत

४००० देव उठाते है ताराके वैमानकों २००० देव उठाते है
पूर्वादि दिशा पूर्ववत् समझना.

(११) मांडलाद्वार-जोतीपीदेव दक्षिणायनसे उत्तरायन
गमनागमन करते है उसे मांडला केहते है अर्थात् चलनेके
सडकको मांडला केहते है वह मांडलाके क्षेत्र ५१० जोजन है
जिस्में ३३० जोजन लवण समुद्रमें और १८० जोजन जंबु-
द्वीपमें है कुल ५१० जोजन क्षेत्रमें जोतीपी देवोंका मांडला है
चन्द्रका १५ मांडला है जिस्में १० मांडला लवणसमुद्रमें और
५ मांडला जंबुद्वीपमें है एवं सूर्यके १८४ मांडला है जिस्में ११६
लवणसमुद्रमें और ६४ मांडला जंबुद्वीपमें है ग्रहका ८ मांडल
है जिस्में ६ मांडला लवणसमुद्रमें २ जंबुद्वीपमें है जो जोती
पीयोंका जंबुद्वीपमें मांडला है वह निपेड और निलवेत पर्वतों
उपर है । चन्द्रमांडल मांडल अन्तर ३५ जोजन उपर ३३ ।
और सूर्य मांडल मांडल अन्तर दो जोजनका है इति.

१२. गनिद्वार-सूर्य के गक्रान अर्थात् आमादि श्रु-
पूर्णमास गत्र एक महानम १२०० इतनी क्षेत्र चाले तत्र
मकर गक्रान अर्थात् पाप श्रुत पूर्णमान एक महानम ५३००
नम क्षेत्र चाले चले चन्द्रमा के गक्रानम एक महान
१००० मकर गक्रानम १००० १०००

१३. तपस्वर- एक गक्रानम तपस्वर २७००६ । ३३

उगतो सूर्य ४७२६३५५ जोजन दुरासे द्रष्टिगोचर होता है मकर संक्रात तापक्षेत्र ६३६६३५५ । उगतो सूर्य ३१८३१३५५ द्रष्टिगोचर होते हैं इति.

(१४) अन्तराहार-अन्तरा दो प्रकारसे होता है व्याघात-फिसी पदार्थकि विचमें ओट आवे निर्व्याघात फिसी प्रकारकी चाद न होय जिस्मे व्याघातापेक्षा जघन्य २६६ जोजनका अन्तरा है क्योंकि निपेड निलयन्नपर्यतके उपर शृंटाशिरपर २५० जोजनका है उन्हीमे चातर्फ आठ आठ जोजन जोतीर्षादेय दुरा चाल चलते हैं चास्ते २६६ जो० उन्कृष्ट १२२४२ जो० क्योंकि १०००० जो० मेरुपर्यत है उन्हीसे चातर्फ ११२१ जो० दुरा जोतीर्षा चाल चलते हैं १२२४२ जो० अन्तर है, अलोक ओर जोतीर्षादेयोंके अन्तर ६१११ जो० मंडलापेक्षा अन्तरा मेरुपर्यतमे ४४८८० जो० अन्तरका मंडलका अन्तर है, ४५३३० जो० बाहारका मंडलके अन्तर है चन्द्र चन्द्रके मंडलके ३५ । - ; अन्तर है सूर्य सूर्यके मंडलके दो जोजनका अन्तर है निर्व्याघातापेक्ष जघन्य अन्तरका अन्तर उन्कृष्ट दो गाउका अन्तर है इति

मन्वादाय जम्वाडपम दो चन्द्र दो सूर्य लपाममममम चयार चन्द्र चयार सूर्य धानाकम्वगटाडपम चन्द्र • सूर्य कालाटाड ममूडम ४० चन्द्र ४० सूर्य पृष्ठा

द्विपमें ७२ चन्द्र ७२ सूर्य, एवं मनुष्यवेत्रमें १३२ चन्द्र १३२ सूर्य । आगे चन्द्र सूर्यकी संख्या अत्राय-जिस द्विप या समुद्रका प्रश्न करे उन्हीके पीछेका द्विपमें जितना चन्द्र हो उन्हीको तीनगुणा कर शेष पिच्छलेको समल करदेना, जैसे घातकीखण्डद्विपमें १२ चन्द्र है उन्हीको तीनगुणा करनासे ३६ और पिच्छले जंबुद्विपका २ लवणसमुद्रका ४ एवं ६ को ३६ के साथमें मीलादेनासे ४२ चन्द्र कालोदद्विसमुद्रमें हवे ४२ को तीन गुणकर १२६ पिच्छला २-४-१२ एवं १८ मीलानेसे १४४ चन्द्र पुष्करद्विपमें हवा जिसमें आदा मनुष्य-लोकमें होनासे ७२ गीना गया है इमी माफीक सर्व ध्यानपर भावना रखने इति.

(१६) परिवारद्वार-एक चन्द्र या सूर्यके २८ नक्षत्र ८८ ग्रह ६६२ ७१ क्रांटाक्रोड नामोंका परिवार है शंका-नारोंकी मन्वका संवमान करनेमें हम लक्ष जोजनका संवमें इतना नाम ममायम हा नहीं शंका है ? इसके लिये पूर्वोक्तार्थोंने क्रांटाक्रोडका एक मज्जापिपमें मानी मानलम होने है या किसी आचार्यान नारका रमानके उन्मंदागुजमें भी माना है तन्व कयनागम्य । इमी माफीक सर्व चन्द्र सर्व सूर्याके वि ममभना । नक्षत्रग्रहद्वारका नाम उदजोनीया चक्रमे दम्बों

१२७ इन्द्रद्वार अमम्व्याना चंद्र सूर्य है यह सर्व इन्द्र है परन्तु धर कि अथवा एक चन्द्र इन्द्र दुमग सूर्य इन्द्र है.

शुद्धि सूर्यकी, उन्होमे महाशुद्धि चन्द्रकी अर्थात् सर्वसे शुद्ध
शुद्धि तारोंकी और सर्वसे महाशुद्धि चन्द्र देवों की है।

(२५) वैक्रय-जोतीषी देव वैक्रयसे जोतीषी देवी देवता
बनाके सम्पूर्ण जम्बूद्विप भर दें और संख्याता जम्बूद्विप भा
देने कि शा है एवं चन्द्र सूर्य सामानांक और देवी भी
समकना।

(२६) अथधिदार-जोतीषी देव अथधिज्ञानमे ज० में
प्याने द्विप समूह देखे ३० भी संख्याने द्विप समूह देगे उर
अपने अपने ध्वजा। अथो पेटली नरक देखे तीरपञ्चा संख्याने
द्विपसमूह देखे।

२७) परिचारणा-जोतीषी देवोंके परिचारणा तीन
प्रकारकी है यनकी गणकी रूपकी कपडकी कायाकी अर्थात्
रूपकी कायाकी अर्थात्

१)
२)
३)

४)
५)

६)
७)

७	२४००	"	८००	"	४०	"
८	२४००	"	८००	"	६०००	
९	२३००	"	८००	"	}	४००
१०	२३००	"	८००	"		
११	२३००	"	८००	"		
१२	२३००	"	८००	"	}	३
ह मी०	२२००	"	१०००	"		
५ अणु	२१००	"	११००	"		

सुमासप्त, श्रीवत्स, नन्दीवर्तन, कामगमनामाविमान मणोगम
प्रीयगम विमल सर्वतोभद्र.

(१२) चन्ह, (१३) सामानीक, (१४) लोकपाल,

(१५) ताव० (१६) आत्मरक्षकदार.

इन्द्र.	चन्ह.	साम०	लो०	ता०	आत्म०
शमिन्द्र	मृग	२४०००	४	३३	३३६००
इरानेन्द्र	महेष	२००००	४	३३	३२०००
संनन्द०	सुर	७२०००	४	३३	२२२००
मिन्द्र	निह	७००००	४	३३	२२०००
मदिन्द्र	दकरा	६००००	४	३३	२४०००
संतकेन्द्र	टेटका	५००००	४	३३	२००००
महाशुभेन्द्र	सद्य	४००००	४	३३	१६०००
महेशेन्द्र	रानी	३	४	३३	१२०००
पराशर	सद्य	.	.	३३	२००००
सुभद्र	सद्य	.	.	३३	२००००

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
41	42	43	44	45	46	47	48	49	50
51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70
71	72	73	74	75	76	77	78	79	80
81	82	83	84	85	86	87	88	89	90
91	92	93	94	95	96	97	98	99	100

1. 1000 2000 3000 4000 5000 6000 7000 8000 9000 10000
 11000 12000 13000 14000 15000 16000 17000 18000 19000 20000
 21000 22000 23000 24000 25000 26000 27000 28000 29000 30000
 31000 32000 33000 34000 35000 36000 37000 38000 39000 40000

41000 42000 43000 44000 45000 46000 47000 48000 49000 50000
 51000 52000 53000 54000 55000 56000 57000 58000 59000 60000
 61000 62000 63000 64000 65000 66000 67000 68000 69000 70000

71000 72000 73000 74000 75000 76000 77000 78000 79000 80000
 81000 82000 83000 84000 85000 86000 87000 88000 89000 90000
 91000 92000 93000 94000 95000 96000 97000 98000 99000 100000

सुमाख्यस, श्रीचत्स, नन्दीवर्तन, कामगमनामायैमान मणोगम
प्रीयगम विमल सर्वतोभद्र.

(१२) चन्ह, (१३) सामानीक, (१४) लोकपाल,
(१५) ताव० (१६) आत्मरक्षकद्वार.

इन्द्र.	चन्ह.	साम०	लो०	ता०	आत्म०
शक्रेन्द्र	मृग	८४०००	४	३३	३३६०००
इशानेन्द्र	महेप	८००००	४	३३	३२००००
संनखु०	सूर्यर	७२०००	४	३३	२८८०००
महेन्द्र	सिंह	७००००	४	३३	२८००००
महेन्द्र	यकरा	६००००	४	३३	२४००००
लंतकेन्द्र	देडका	५००००	४	३३	२०००००
महाशुकेन्द्र	अश्व	४००००	४	३३	१६००००
महसेन्द्र	हस्ती	३००००	४	३३	१२००००
पशुकेन्द्र	मप	२००००	४	३३	८००००
अनन्तन्द्र	गम	१००००	४	३३	४००००

मानका... यथा-गज... प्रत्येक... आनका... १०७ गुणो है जमे शक्रेन्द्रक...

१२७ गुण करनेसे १०६६८००० देव प्रत्यक अनिकाका होते है इसी माफीक सर्व इन्द्रोके समझना.

(१८) परिपदाद्वार-प्रत्यक इन्द्रके तीन तीन प्रकारकि परिपदा होती है अर्भितर, मध्यम, बाह्यदेव देसो यंत्रमे.

इन्द्र.	अर्भितर.	मध्यम.	बाह्य.	देवी.
१	१२०००	१४०००	१६०००	शुकेन्द्र
२	१००००	१२०००	१४०००	७००
३	८०००	१००००	१२०००	६००
४	६०००	८०००	१००००	५००
५	४०००	६०००	८०००	इशानेन्द्र
६	२०००	४०००	६०००	६००
७	१०००	२०००	४०००	८००
८	५००	१०००	२०००	७००
९	२५०	५००	१०००	शेष इन्द्रके
१०	१००	२५०	५००	देवी नहीं.

(१९) द्वाडार गण्डक आठ अथ महिपीदेवी है प्रत्यक दहीक गाला गाला इनाम देवीमा परिवार है १००० ७ प्रत्यक देवी गाला गाला इनाम रूप वैक्रय कर गली है २००० १००० १००० इनाम देवी एक इन्द्रके भागमें

(४) इत्याग्रे	११	११	११
(६) इरागे	११	११	११
(७) नयमे	११	११	११
(८) आटवा अयस्यातगुणा			
(९) गालवा	११	११	११
(१०) श्रुटे	११	११	११
(११) वाचो	११	११	११
(१२) शोवे	११	११	११
(१३) शीत्र	११	११	११

१४ ६४

१५ ६५ १६ ६६ १७ ६७ १८ ६८ १९ ६९ २० ७०

२१ ७१ २२ ७२ २३ ७३ २४ ७४ २५ ७५

२६ ७६ २७ ७७ २८ ७८ २९ ७९ ३० ८०

३१ ८१ ३२ ८२ ३३ ८३ ३४ ८४ ३५ ८५

थोकडा नं. ७

सूत्रश्री जम्बुद्विपप्रज्ञासी.

(खण्डा जोयण)

गाथा—खंडा जोयण वासा,
पञ्चय कूडा तिर्य सेदीओ ।
विजय दहे सलिलंओ,
पिंडए होइ संगहणी ॥ १ ॥

इस लक्ष जोजनके विस्तारवाले जम्बुद्विपको १०
द्वारमे घतलाये जावेगे.

(१) खंडा—जम्बुद्विपका भरतक्षेत्र परिमाण कितने
खंड होत है

(२) जोयण—जम्बुद्विपका ज्ञान परिमाण कितना

(३) वामा—जम्बुद्विपमे मनुष्य रहनेका कितना
वामा है.

सुन्दर रूप तथा मौक्तफल की मालाओं से सुशोभित हैं मध्य-भागमें पञ्चवर वेदिका आजानेसे दो विभाग हो गये हैं (१) अन्दर का विभाग (२) बाहार का विभाग जो अन्दर का विभाग है उन्हीं के अन्दर अनेक जातिके वृक्ष आजानेमें अन्दरका वनखंड कहा जाते हैं उन्हीं के अन्दर पांच वर्ण के वृक्ष रत्नमय हैं पूर्वादि दिशोंका मन्द वायु चलनेमें छे राग ३६ रागणी मन और श्रवणोंको आनन्दकारी ध्वनी निकलती है उन्हीं वनखंड में और भी छोटी छोटी घासी और पर्वत आगय हैं वह अनेक आसन पडे हैं वहाँ व्यंतर देव और देवीयाँ आते हैं पूर्वकृत पुण्यकों सुखपूर्वक भोगवते हैं इगी माफ़ीक बाहारका वन भी रामभना परन्तु वहा नृण नहीं है ।

मरु पर्वत के चारों दिशा पैतालीम पैतालीम हजार योजन जानेपर चारो दिशा उन्ही जगलिके अन्दर चार दर-वाजा आते हैं वह दरवाजा आठ योजनके उंचे चार योजन के चाट है दरवाजा उपर नवभूमि आठ संपन्नमट छवचमर नवजा और आठ आठ मगनाक १ । दरवाजाक टाना नके दो दो चौतरा के उन्हीके उपर प्रायाः नौराग चन्दनके कल्पमें नगर राज आदि राज इषक हृदय अर मनोहर रूपवासी वृत्तन राम गुनाभाव २

• पुर दशम विवर नामका दरवाजा है

• दशमदिशम विजयन्त नामको दर

(३) पश्चिमदिशमें जयन्तनामा दर०

(४) उत्तरदिशमें अप्राजित नामा दर०

इन्ही चारों दरवाजोंके नामके चारों देवता एकेक ज्योपमाफि स्थितिवाले हैं उन्हींकी राजधानी अन्य जन्मुद्विपमें हैं। अधिक विस्तारवालोको जीवाभिगमसूत्र देखना चाहिये।

(१) भरतक्षेत्र-जहाँपर हम बैठे हैं इन्हींको भरतक्षेत्र कहते हैं। यह चुलहेमयन्तपर्वतमे दक्षिणकी तर्फ विजयन्त नामे उचरकी तर्फ पूर्व और पश्चिम जगतिके बाहार लव-सुद्र हैं शर्वचन्द्रके आकार हैं मध्यभागमें घंटाडपर्वत नामे भरतक्षेत्रका दो विभाग कहाजाते हैं (१) दक्षिणभरत

२) उत्तरभरत ।
चुलहेमयन्तपर्वतपर पद्मद्रुहमे गंगा और सिन्धुनदी उत्तर भरतका तीन विभाग करति हैं तमस्रगुफा और संट-प्रमाणपर तीन घंटाडपर्वतको भेदके दक्षिणभरतका तीन विभाग करति हैं उत्तरभरतका दो विभाग करति हैं उत्तरभरत

दक्षिणकी तर्फ विजयन्त नामका दरवाजा है । पूर्व पश्चिम दोनों खंडमें हजार हजार देश मीलाके दक्षिणभरतके तीनों खंड १६००० देश है इसी माफिक उत्तरभरतमें भी १६००० देश है इन्हीं भरतक्षेत्रमें कालकि हानि वृद्धिरूप सर्पिणी उत्सर्पिणी मीलके कालचक्र है वह देखो. छे आरोग्य धोकडामें । सर्पिणीमें २४ तीर्थकर १२ चक्रवरत ६ बलदेव ६ वामुदेव प्रतिवामुदेव नियमत होते हैं । इति.

(२) एरभरतक्षेत्र—भरतक्षेत्रकि माफिक है परन्तु मध्यक्षेत्रकि मर्यादाकारक चुलहेमवन्तपर्वत है और एरभरतक्षेत्र मर्यादाकारक सीखरीपर्वत है शेष बराबर है इति.

(३) महाविदह क्षेत्र—निषेड और निलवन्त देश पर्वतोंके बिचमें महाविदहक्षेत्र है यह पलंक के मंथान है परन्तकि ३२ विजयमें अन्तकृत है । अथवा महाविदहक्षेत्र न्याय विभागकर दिया जावेमें तो १ पूर्व विदह २ पश्चिम विदह ३ देशक उत्तरक

विदहक्षेत्रक मध्य भागमें मध्य पर्वत पृथ्वीपर १००० मी. क विस्तारमाना है उत्तरके पूर्व पश्चिम दोनों तर्फ चार चारोंपट्टीयों में जो जनका भद्रगान्धवन है उत्तरमें दोनों तर्फ (१) पश्चिम गान्धा गान्धा विजय है अर्थात् पूर्व विदहरूप (२) विजया और पश्चिम विदह रूप (३) विजय है ।

मध्य पर्वत १०००० जो जनका है उत्तरमें उत्तर दक्षि

लेखनाम	दासिगोत्र परलापणं	श्राद्ध	जीवा	धनुषपीठ
दासिगोत्र	२३ = जी० ३	०	६७४८ + १२	६७६६ + १
उत्तरगोत्र	२३ = + ३	१ = ६२ + ७॥	१४४७१ + ६	१४४२८ + ११
दक्षिणगोत्र	२४ + ४	६७४४ + ३	३७६७४ + १६	३८७४० + १०
दक्षिणगोत्र	२५ + ४	१३३६१ + ६	७३६०१ + १७	८४०१६ + ४
महादक्षिणगोत्र	२३६ - ४ + ४	३३७६७ + ७	१०००००	१४ = ११३ + १६
उत्तरगोत्र	२६ + ३	०	४३०००	६०४१८ + १२
उत्तरगोत्र	२७ + ३	०	४३०००	६०४१८ + १२
दक्षिणगोत्र	२८ + ४	१३३६१ + ६	७३६०१ + १७	८४०१६ + ४
दक्षिणगोत्र	२९ + ४	६७४४ + ३	३७६७४ + ६	३८७४० + १०
दक्षिणगोत्र	३० + ३	१ = ६२ + ७॥	१४४७१ + ६	१४४२८ + ११
उत्तरगोत्र	३० = + ३	०	६७४८ + १२	६७६६ + १

निकलने हूये देवकूरु उधरकूरु युगलक्षेत्र और विजयके विचमें मर्यादा करनेवाले हस्तिके दन्तके आकार मेरुपर्वतके पास जायलामे है.

(४) घृतलवताड्य पर्वत हेमवय, एरणवय, हरिवाप्त, रम्यरू-
वाम वह च्यार युगल मनुष्योंका क्षेत्र है इन्दीके मध्यभागमें
न्यार घृतल वताड्यपर्वत है.

(४) चितविचितादि निपेडपर्वतके पासमें और सीतानदीके
दोनो तटपर चित और विचित दो पर्वत है इमी माफिक निलवन्त
पर्वतके पासमें सीतोदानदीके तटपर जमग समग दो पर्वत है.

(१) जम्बुद्विपके मध्यभागमें गिरिराज मेरुपर्वत है. इति.

(विवरण)

(१) दो सौ (२००) कञ्चनगिरिपर्वत पचवीस जोजन
धरतिमें १०० जोजन धरतिमें उंचा मनमें ५०० जो० लम्बा
चोटा मनमें ७४ जो० उपरमें ४० जोजन विस्तारवाला है
तीनगुनी जाभेरी पर्वत मने कञ्चनमथ है ।

(२) शीर्षीम दीघ वताड्यपर्वत पचवीस गाउ धरतीमें
५ पचवीस जोजन धरतीमें उंचा पचान जो० विस्तारवाला है ।
इन्दीके दोनो तफे बाह ४०० जो० १६ कला है जीवा
१०७२० जो० १२ कला धनुषपीण १०७६३ जो० १२ कला
है प्रत्येक वताड्यपर्वतके अन्दर दो दो गुफावाँ है (१) तमस
गुफा (२) मंडप्रभागुफा वह गुफा ४० जोजनकि लम्बी १२

(१) मद्रशालवन—मेरुपर्वतके चोतर्फ धरति उपर
 पूर्व पश्चिम २२००० बावीस हजार जोजन ओर उत्तर दक्षिण
 अडाइसो २५० जोजनका है एक वनगंड एक वेदीका चोतर्फ
 है श्यामप्रभाकर अन्धा शोभनिक है । मेरुपर्वत के पूर्व दिशा
 तर्फ मद्रशालवनमे ५० जोजन जावे तब एक सिद्धायतन
 (जिनमन्दिर) आवे वह ५० जो० लम्बो २५ जो० चौडा
 ३६ जो० उचा अनेक स्थभा पुतलीयो आदिसे सुशोभीत है
 उन्ही सिद्धायतन के तीन दरवाजा है । वह आठ जोजनका
 उचा ओर च्यार जोजनका चौडा जीमपर सुपेत गुमटकर
 सोभायमान है उन्ही सिद्धायतन के मध्य भागमे एक मणि-
 पीठ चौतरो ८ जो० लम्बो चौड । च्यार जो० जाडो
 सर्व स्नमय है । उन्ही चौतर्गके उपर एक देवन्हाडो (जहा
 जिन प्रतिमा वीराजमान है उन्ही को मन गुभाग भी कहा
 जाते है वह ८ जो० लम्बा चौडा साधिरु आठ जो० उचा
 उचपणे है वगन करने योग्य है उन्ही के अन्दर तिनोम्य
 पूजनीक तीर्थकर भगवान कि प्रतिमाया पद्मानन विराजमान
 है यावन धूपके कुडचे आदि रहे थे । एव दक्षिण
 एव पश्चिम एवं उत्तर अथवा च्यागे दिशाम च्यार जिन
 मन्दिर प्रवचन समझता । मेरुपर्वत मे उशान कोनमे मद्रशाल
 वनमे जावे तब च्यार नन्दा पुष्करगण गरी आति है पद्मा
 पद्माप्रभा, कुमुदा कुमुदप्रभा यह चारी ५० जो लम्बो २५

जो० चांडी १० जो० उठी वेदिका वनखंड तोरणादि करी संयुक्त है उन्ही च्यार बावीसों के मध्य भागमे इशानेन्द्रका प्रधान प्रासाद (मूल) है वह प्रासाद ५०० जो० उचा २५० जो० विस्तारवाला है यावत् सपरिवार के आसन सहित है । एवं अग्निकोनमें भी च्यार बावीस हैं उत्पला, गुम्मा निलना उज्वला पूर्ववत् परन्तु इन्ही बावीसों के मध्य भागमे शकेन्द्रका प्रासाद है एवं वायुकोनमे च्यार बावीस हैं त्रिंशा भिंगनाभा अञ्जना अञ्जनप्रभा-मध्यमे शकेन्द्रका प्रासाद त्रिंशामन सपरिवार समभक्ता एवं नैऋतकोनमे च्यार बावीस श्रीकन्ता श्रीचन्दा श्रीमहीता श्रीनलीता मध्यभागमें प्रासाद इशानेन्द्रका समभक्ता बावीस-बावीसों के अन्तर्गमे जो० मूर्त्ति जमान है उन्हीं के उपर इन्द्रका प्रासाद है भद्रशालवनमें आठ दिशिशासिमें आठ तस्मिंकुट है वह ५०० जो० धरतामें २०० जो० धरतामें उचा है मूलमें पांचसौ जो० मध्यमें ३०० जो० उपर २५० जो० विस्तारवाला है तानगुणा म.मेंग पशुदे १० पश्चतर, तिल वन्त, सुहस्ति, अञ्जन भाग, कुमड, पीलास, विटिस, रोयण गार, इन्ही आठ तृतीयपर तृतीयास देवता और दशकोंका भवन बनमा है उन्ही देवता राजधानी थापना पमान दिशामे अन्य जम्गाउपमें जानापर यात्रा राजय देववत् समभक्ता भद्रशालवन तृज गुन्दा गुमापला तृण कर शोभाय

(३) सुमानसवन—नन्दनवनके तलासे ६२५०० जोजन
 र्वे जावे तब सुमानस नामका वन आवे । यह पांचसौ जोजन
 विस्तारवाला मेरुपर्वतको चौतर्फ घेरे रखा है वेदीकावन
 ह चार जिनमन्दिर १६ बाबी शक्रेन्द्र इशानेन्द्रका ४
 साद पूर्ववत् समझना चावत् देवतादेवी आते है।

(४) पंडकवन—सुमानसवनमे ३६००० जोजन उर्ध्व
 वे तब मेरुपर्वतके शिखर उपर पंडकवन आता है ४६४
 १० चक्रवाल चुडी आकार मेरुपर्वतकी चुलका (१२ जोजन)
 में चौतर्फ घेरे रखा है । वेदीकावन खंड चार जिनमन्दिर १६
 बी शक्रेन्द्र इशानेन्द्रका चार प्रासाद पूर्ववत् समझना ।
 डकवनके मध्यभागमें मेरुचुलका है वह ४० जोजनकी
 ची है मूलमें १२ मध्यमें ८ उपरमें ४ जोजन विस्तारवाली
 माधिक तीनगुणी परदि । मय वैन्द्रीय रत्नमय है । एक
 दिका वनखंडमे बीटी हू है । उपरका तलो मणिजडिन है
 ध्यभागमें एक सिदायतन एक गाडक लम्बा आटा गाडका
 ताहा देशोना गाडका उचा मनेक म्यानकर शोभनीक है
 ००० मणिपट्ट देवन्दरा चार वक्रमन जिनमतिनासो वायव
 पवृ उचा आदि देवतादेव वनापर आते है ता लोपधरमुनि
 ००० जाते है तिलोक्य पृथम क वायव्यकरीका मेयानाक करते है।

पंडकवनमें चार दिशाबोधि चार इनिशेष ज लासो

३४ श्रृपभकुंड एवं ५८ सर्व मीलके ५२५ कुंड है त्रिमं
 वर्षघरपर्वतोका ५६ शोलायस्कारोका ६४ च्यार गजदन्ता
 ३० नन्दनवनका = भद्रशालवनका = एवं १६६ कुंड
 कुंड ५०० जोजनका उचा ५०० जो० मूल पदूला
 २५० जोजन विन्तारवाला है और गजदन्ताके २ नन्दनवन
 ? एवं ३ कुंड १००० जो० का उचा तथा मूलमे १
 जो० का पदूला शीखरपर ५०० जो० पदूल है एवं १६६

चौतीस बैतायका ३०६ कुंड २५ गाउका उचा
 मूल पदूला तथा शीखर पर १२॥ गाउका पदूला है । जनु
 पीठका = मामली पीठका = और श्रृपभकुंड ३४ एवं ५०
 आठ जोजनका उचा आठ जोजनका मूलमे पदूला
 शीखरपर ४ जोजका पदूला है एवं कुल ५२५ कुंड ममकता

उपर जो ५२५ कुंड करे है इन्हीमे ७६ कुंड प
 त्रिनमंदिर है जोष ४४६ कुंड पर देवता और देवीयोका ३
 है यथा-छे वर्षघरपर्वतो पर छे त्रिन मन्दिर शोलायस्क
 पर्वतो पर १६ त्रिनमन्दिर । च्यार गजदन्ता पर च्यार त्रि
 मन्दिर आठ देवता आठ उनायक और चौतीस बैताउपर्व
 ३० त्रिनमन्दिर एवं कुल ७६ त्रिनमन्दिर है इन्हीके निरा
 नद्रशालवनका नन्दनवनका - मृगानभवनका - पदुग रक
 नका - मम कुल - ...

१५ मीलाके ५५ जिनमन्दिर साम्यता है परिमाण—द्वे वर्षपर
 लावम्बार च्यार गजदन्ता च्यार भद्रशाल च्यार नन्दनचन
 चार गुमानचपन च्यार पंढराचन एवं ४२ स्थानके जिनमन्दिर
 चान पचास जो० लम्बा पचासिम पचासिम जो० चोटा द्वीप
 तीम जो० उचा अनेक ग्याभ पुनलीया तार आदिमे अन्धा
 शोभित नर्य रत्नोमय है उन्ही जिनमन्दिरोंके तीन तीन
 रवाजा है प्रत्येक दरवाजा आठ जोजनका उचा च्यार जो०
 एला तोरग ग्याभ आदिमे अन्धा मनोहर है.

चौतीम वैताड्य आठ देवहूरु आठ उत्तरहूरुके पीठका
 या जम्बुद्वीपका एक नामलीवृक्षका एक और मेरुचुडुकाका एक
 एवं ५३ जिनमन्दिर एक कोपका लम्बा आठ कोपका पहला
 १४४० धनुषका उंचा नर्य रत्नमय है इन्ही नर्य सिद्धायतनों
 अर्थात् जिनमन्दिरोंमें श्रीलोचय पूजनिक तीर्थकरोंकी शान्तमुद्रा
 प्रमाणनमय स्तूपियाँ है उन्हींकी मेवाभाक्ति अर्चनादि देवदेवी
 विद्याधर करते हैं.

शेष ४०६ कुट तथा २०० कश्चनगिरि ४ घुनलवैताड्य
 ४ चित्तविचिन्त जमगममग एवं मय ६५७ स्थानपर देवीदेवनोंका
 आवास भुवन है इति

६ तीर्थदार जम्बुद्वीपम तीर्थ . है ३४ लौकिक
 नाम्यता तीर्थ है जिन समय चक्रवर्त खट साधनेकी जाते है

तब बहांवर ठेरते है यह तीर्थार्घ्यदायक देवोंका अष्टमतप करते है या तीर्थकरोंका जन्माभिषेकके लिये उन्ही तीर्थोंका जल आंषधि आदि देव लाते है इत्यादि यह तीर्थका नाम-मागध, वरदाम और प्रभाम एवं चक्रवरतकि ३४ विजयमें तीन तीन तीर्थ होनासे १०२ तीर्थ है.

(७) श्रेणी-जम्बुद्विपमें श्रेणी १३६ है यथा वैताञ्जगिरि २५ जोजनका धरतिमें उंचा है उन्ही परतके उपर धरतिमें १० जोजन उपर जाये तब विद्याधरोंकी २ श्रेणि (१) दक्षिण श्रेणि जिम्में ५० नगर है (२) उत्तर श्रेणि जिस्में ६० नगर आते है उन्ही विद्याधरोंकी श्रेणिमें दश दश जोजन उंचा जाये तब अभियोग देवोंकी दो दो श्रेणि आति है (१) दक्षिण श्रेणि (२) उत्तर श्रेणि बहांवर च्यवनदेवना पूर्व कीये हूये मुकृतके फल भोगवते है एवं ३४ वैताञ्जपर व्यान च्या श्रेणि है सर्व मालिके १३६ श्रेणि होती है उत.

(८) विजयद्वार-जम्बुद्विपमें ३- विजय के उपापर चक्र-
गत त्रे गडको विजय करने के अर्थान् उ गडमें एक छव
गन करने है

महापिदेहकेत्र एक है पान्तु उन्हामें ३० विजय अलग
अलग है जिम्में १६ विजय मन्पर्वतमें पृथकी तर्फ है और
१६ विजय मन्पर्वतमें पश्चिमकी तर्फ है जो पूर्व महापिदेहमें १६

विजय है उन्हीके विचमें सीता नाम नदी है चात्ते सीतानदीके
 उत्तर तटपर = विजय और दक्षिण तटपर आठ विजय है
 इनी नातीक पश्चिम महाविदेहमें सीतोदा नदीके दोनो तटपर आठ
 आठ विजय है एवं विदेहक्षेत्रमें ३२ विजय है उन्हीका नाम-

पूर्व विदेह सीतानदी.		पश्चिम विदेह सीतोदानदी.	
उत्तर तट.	दक्षिण तट.	उत्तर तट.	दक्षिण तट.
१ कच्छ विजय	वच्छ विजय	पन्न विजय	विप्रा विजय
२ सुकच्छ ..	सुकच्छ ..	सुपन्न ..	सुविप्रा ..
३ महाकच्छ ..	महावच्छ ..	महापन्न ..	महाविप्रा ..
४ कच्छवती ..	वच्छवती ..	पद्मावती ..	विप्रावती ..
५ आश्रिता ..	रमा ..	मंगला ..	वग्गु ..
६ मंगला ..	रमर ..	हुमदा ..	सुवग्गु ..
७ पुनर्वती ..	रमरवती ..	नितीला ..	गन्धीला ..
८ पुनर्वती ..	रमरवती ..	विजय ..	विजय ..

चौतीस तमस गुफा ३४ खंडग्रमागुफा ३४ राजधानी ३४
नगरीयों ३४ कृतमाली देव ३४ नटमाली देव ३४ अपमङ्कट
३४ गंगानदी ३४ सिन्धुनदी यह सर्व पदार्थ सास्वता है
शेष नाम देखो जम्बुद्विप प्रज्ञाप्तीमे इति.

(६) द्रवद्वार-जम्बुद्विपके अन्दर शोला द्रव है यथा
पद्मद्रव, महापद्मद्रव, तीगीच्छद्रव, केशरीद्रव, महापुडरिकद्रव,
पुडरिकद्रव, यह छे द्रव छे वर्षाधर पर्वतोंके उपर है और पांच
द्रव देवकूरु युगल क्षेत्रके अन्दर है निषेडद्रव, देवकूरुद्रव,
सूर्यद्रव, सलसद्रव, विद्युत्प्रभद्रव तथा पांच द्रव उत्तरकूरु युगल
क्षेत्रके अन्दर है निलवन्तद्रव, उत्तरकूरुद्रव, चन्द्रद्रव एगवत
द्रव मालवन्तद्रव एवं सर्व १६ द्रव जम्बुद्विपके अन्दर है ।

(१) पद्मद्रव—चुलहेमवन्त पर्वत १०५२-१२ पहूल
है जिन्होंका मध्य भागमे पद्मद्रव है वह पूर्व पश्चिम एक हजार
जोजनको, लम्बा और उत्तर दक्षिणमें ५०० जोजनको चांडो
दश जोजनको उढो परिपूर्ण निमेल वाणीमे भरा हुआ है वह
द्रव अनेक कमलों कर अच्छा शोभनिक है । कमलोंका
विवरण ।

द्रवके मध्य भागमे श्रीदेवीका उटा कमल है उन्ही के
चौनके भंडारी देवोंका १ = कमल है, चार कमल मेहचरीक
देवीयोंका है, मान कमल श्रीदेवीके आनिकाके अधिपति देवोंका

तोरण ध्वज आदि चित्रोंमें सुन्दर है उन्हीं भुवनके मध्यभागमें एक मणिपीठ चौतरा है ५०० धनुष लम्बा २५० धनुष चौड़ा उन्हीं चौतरा उपर एक देवशय्या है यह वर्णन करनेयोग है यावत् वहांपर श्रीदेवी अपने देवदेवीके साथ पूर्वउपार्जित शुभ फलोंको भोगवती हुई आनन्दमें रहती है। यह पद्मद्रहके बाह्य एक पद्मवेदिका और एक वनखंड कर बीटा हुआ है शेषाधिकार नदीद्वारमें लिखेंगे इसी माफीक सीखरीपर्वतपर पुंडरिकद्रह भी समझना परन्तु उन्हींके देवी लक्ष्मिदेवीका भुवन या कमल है इसी माफीक देवकूट उत्तरकूट युगल क्षेत्रोंमें १० द्रहका भी वर्णन समझना परन्तु उन्हीं द्रहोंके बाह्य वेदिका दो दो है कारण उन्हीं द्रहोंमें सीता और सीतोदानदी वेदिकाको भेदके द्रहमें आति है और वेदिकाको भेदके द्रहमें निकलती है वामने वेदिका दो दो है शेष अधिकार पद्मद्रह माफीक समझना । १२ ।

१३ महापद्मद्रह नामके पर्वतके उपर मध्यभागमें जो लम्बा और चौड़ा दश जो उदा महापद्म नामका द्रह है उन्हींपर लक्ष्मी देवीका कमल तथा भुवन है परन्तु कमलका मान दुर्गुणा समझना इसी माफीक रूपिपर्वतपर महापुंडरिकनामा द्रह है परन्तु उन्हींपर बुद्धिदेवीका कमल और भुवन है देवी माफीक समझना । १४ ।

चुलहेमवन्तपर्वतका पद्मद्रहके पश्चिम तर्फसे निकली सिंधुप्रभा-
 कुंडमें होके पूर्ववत् १४००० नदीयोंका परिवारसे पश्चिमके
 लक्ष्यसमुद्रमें परन्तु वहां तमसप्रभागुफाके निचासे तथा कुंडका
 नाम सिंधुकुंड तथा सिंधुदेवीका भुवन समझना एवं दोनों
 नदीयोंका परिवार २८००० नदीयों हैं । वह पर्वतपर निक-
 लती आदा जोजनकी उंडी और ६। जोजनकी विस्तारवाली
 थी पीछे क्रमसर बढ़ते बढ़ते जहां लक्ष्यसमुद्रमें मीली है
 वहांपर पांच गाउकी उंडी और ६२ । जो० विस्तारवाली हुई थी-

चुलहेमवन्तपर्वतके पद्मद्रहके उत्तरके तोरणसे रोहीता
 नामकी नदी नीकलके रोहीतप्रभासनामा कुंडमें पडती है यह
 नदी हेमवय युगलक्षेत्रमें गइ है अधिकार गंगानदीके मार्फीक
 परन्तु नीकलनी एक गाउकी उंडी १२॥ जोजनका विस्तार
 वाली है तथा रोहीतप्रभामकुंडका विस्तार द्युगुण १२० जोज-
 नका समझना जहा लक्ष्यसमुद्र पामें १० गाउकी उंडी
 १०॥ जोजन विस्तारवाली है उगी मार्फीक महाहेमवन्तपर्वतपर
 महा १००००० गाउकी उंडी जहा लक्ष्यसमुद्र पामें आइ है परिमाण
 महा १००००० गाउकी उंडी जहा लक्ष्यसमुद्र पामें आइ है परिमाण
 महा १००००० गाउकी उंडी जहा लक्ष्यसमुद्र पामें आइ है परिमाण

महाहेमवन्तपर्वतका उत्तरके तोरणसे रोहीता नामकी नदी नीकलके रोहीतप्रभासनामा कुंडमें पडती है यह नदी हेमवय युगलक्षेत्रमें गइ है अधिकार गंगानदीके मार्फीक परन्तु नीकलनी एक गाउकी उंडी १२॥ जोजनका विस्तार वाली है तथा रोहीतप्रभामकुंडका विस्तार द्युगुण १२० जोजनका समझना जहा लक्ष्यसमुद्र पामें १० गाउकी उंडी १०॥ जोजन विस्तारवाली है उगी मार्फीक महाहेमवन्तपर्वतपर महा १००००० गाउकी उंडी जहा लक्ष्यसमुद्र पामें आइ है परिमाण महा १००००० गाउकी उंडी जहा लक्ष्यसमुद्र पामें आइ है परिमाण महा १००००० गाउकी उंडी जहा लक्ष्यसमुद्र पामें आइ है परिमाण

निलवन्तपर्वतके केशरीद्रहके उत्तरके तोरणसे नरकन्दा और रुपीपर्वतके महापुंडरिकद्रहके दक्षिणका तोरणसे नारीकन्ता यह दोनों नदीयों रम्यक्वास युगलक्षेत्रमें कुंड और देवीका नाम नदी मार्गीक विस्तार परिवार देखो यंत्रसे.

रुपीपर्वतपर महापुंडरिकद्रहके उत्तरके तोरणसे रुपद्रव नदी और सिखरीपर्वतपर पुंडरिकद्रहका दक्षिणका तोरणसे सुवर्णकुलानदी यह दोनों नदी एरणवय युगलक्षेत्रमें गढ़ है परिवारादि देखो यंत्रसे.

सिखरीपर्वतपर पुंडरिकद्रहके पूर्व और पश्चिम तोरणसे रता रक्तवंति यह दो नदीयों एरणवक्षेत्रमें गंगा मिन्धुम्व चौदा चौदा हजार नदीयोंके परिवारमें लक्षणममुद्रमें प्रवेश किया है नदीके मार्गीक कुंडका या देवीयोका नाम ममकना कुंड या सुरनका परिवार गंगाद्वीप मार्गीक है

संस्कृत मन्त्र सूत्रिका

न० ३ - नदी नदी उद्या ५ ३ - मयद्रम प्रवेश होतो उर्ध्व
 निः ५ - निः ५ - निः ५ - ३ - ममुद्रम प्रवेश होतो विम्ब

एवं सर्व मीली १४५६००० नदीयों परिवारकी ए
तया यंत्रमें १४-६४ मीलके ७८ मूल नदीयों हूँ.

महाविदेहक्षेत्रके चार विभागमें ३२ चक्रवर्तकी
विजय है जिस्का २८ अन्तरोंमें १६ तो वस्कारपर्वत पेहते
लिख आये है और १२ अन्तरमें चारह अन्तर नदी है यथा-
गृहवन्ति, द्रहवन्ति, पंकवन्ति, तंतजला, मंतजला, उगमजला,
चीरोदा, सिंहसोता, अन्तोवहनि, उपिमालनि, फेनमालनि,
गंभीरमालनि यह १२ नदीयों प्रत्यक नदी १२५ जोजनकी
चोडी है अटाइ जो० उदी है १६५६२ जोजन और दो
कलाकि लम्बी है एवं सर्व मीलके १४५६०६० नदीयों
जम्बुद्विपमें है यह थोकडा सामान्य बुद्धिवाला सुखपूर्वक
समझ शके वास्ते संक्षेपमें ही लिखा गया है विशेष विस्तार
कि इच्छावालोंके लिये गुरुमहाराजकी विनयभक्ति कर
जम्बुद्विप प्रज्ञाप्तीश्रवण श्रवण करना चाहिये इत्यलम् ।

॥ सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम् ॥



जोजनका पहला है ४११०६६१ जोजन साधिक परदि है
 उन्ही घातकिखंड द्विपमे उत्तर दक्षिण लम्बा च्यार लक्ष
 जोजन । पूर्व पश्चिम एक हजार जोजनका पहला मूलमें एक
 हजार जोजन चोडा यावत् सीसरपर पांचसो जोजन परिमा-
 खवाले दो इच्छुकार पर्वत आजानेसे घातकिखंडके दो विभाग
 हो गये है (१) पूर्व घातकिखंड (२) पश्चिम घातकिखंड
 इन्ही दोनों विभागके अन्दर दो मेरुपर्वत है वह मेरुपर्वत एक
 हजार जोजन धरतीमें उडा और =४००० जोजन धरतीमें
 उंचा एवं =५००० जोजनका प्रत्यक मेरु है । वह मेरुपर्वत
 च्यार बन करके अलंकृत है दूसरे पर्वत या वासा आदि सर्व
 जम्बुद्विपसे दृगुणा ममभना परन्तु क्षेत्रका लम्बा चोडा अधिक
 है और घातकिखंड द्विपमें १२ चन्द्र और १२ सूर्य सपरिवार
 है शेषाधिकार अडाइ द्विपका यंत्रमें लिखा जावेगा इति ।

घातकिखंड द्विपके चौतर्फे गोल बलीयाकार = १००००
 जोजनके विस्तारवाला कालोटाद्वि नामका समुद्र है वह चौतर्फे
 आठ लक्ष जोजनका पहला है २०००६४ जोजन साधिक
 परदि है एक पञ्चम्वर वेदिका एक बनखंड च्यार दरवाजा
 और दरवाजे दरवाजे अन्तर २०००६४६ जो० है वह समुद्र
 इनपर जोजनका उटा है अन्दा तलमे परिपुण भग दूरा ।

कालोटाद्वि समुद्रके चौतर्फे गोल बलीयाकार पूष्कर
 नामका द्विप है वह १६००००० जोजनका चौतर्फे विस्तार-

समुद्र अर्थात् अट्टाइट्रिय द्वाय समुद्रको समय क्षेत्र भी कहा जाते हैं कारण मिथ होता है सो इन्ही समय क्षेत्रमे ही होता है इन्ही अट्टाइट्रियके क्षेत्रका परिमाणः—

- १ त्रम्बुडिय पूर्व पश्चिम मीलके १ लक्ष जो०
- २ लरणगमुद्र " " " ४ लक्ष जो०
- ३ घातकिगंड " " " ८ लक्ष जो०
- ४ कालोदद्विगमु० " " " १६ लक्ष जो०
- ५ गृन्कद्विद्विप " " " १६ लक्ष जो०

परं मनुष्यलोक-समयक्षेत्र-अट्टाइट्रिय ४५ लक्ष जो० नका है किन्तुकि परदि १४२३०२५८ जोत्रन माथिह है अट्टाइट्रियमें जो मौस्य पदार्थ है सो संश्रदा बनसादि जाना है ।

पदार्थ	१) त्रम्बुडियमें	२) घातकिगंड.	३) गृन्क
वस्तुवस्तु	१	-	२
वस्तुवस्तु	६	१०	१३
वस्तुवस्तु	१२	३०	३३
वस्तुवस्तु	४	-	८
वस्तुवस्तु	११	१५	६४
वस्तुवस्तु	-	३०	१८०

शेष द्विपसमुद्रोंके वेदिका भोर वनखंड है परिमाण तथा चन्द्र धर्य यंत्रमें लिखते है जीतना चन्द्र है इतना ही सूर्य है एकेक चन्द्र सूर्यका परिवारमें २८ नक्षत्र ८८ ग्रह ६६६७१ कोडा कोड तारोंका परिवार समझ लेना ।

अट्टाद्विपके साहार जेतीनीयों की चाल नही है मनुष्यता जन्म मृत्यु नही गान विज्ञ यथाद सादर अथि भी नही है ।

नाम	विस्तारपणो	चन्द्रधर्य
जम्बुद्विप	१ सप्त जोजन	२
लवणमसुद्र	२ " "	४
घानकिर्मंड	४ " "	१२
कालांडद्विमसुद्र	८ " "	४२
तृन्कर्गद्विप	१६ " "	१४४
तृन्कर्गमसुद्र	३२ " "	४३२
सप्तमंडल द्विप	६४ " "	१६८०
चतुर्द्विप	१२८ " "	१०३६८
अष्टद्विप	२५६ " "	१६४८६४
अष्टद्विप	५१२ " "	६६८६४८

द्विप	१०२४ " "	१८८२८८
" समुद्र	२०४८ " "	७७६४२४
द्विप	४०९६ " "	२६६११२०
" समुद्र	८१९२ " "	६०८४६३२

इति सात द्विप सात समुद्र ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सद्यम् ॥

धोकाडा नम्बर ३

(मृत्त धी जीयाभिगम प्र० ३)

—

—

—

—

—

—

—

—

दिन प्रतिमापचामन शान्तमुद्रा स्थुभ सन्मुख मुख किया हवे
 जिगजमान है। उन्दि स्थुभसे आगे एक मणिपिठ चानरो है
 ए आठ जोजनके दिग्गारवाला उन्टोंके उपर चैन्य वृक्ष आठ
 जोजनको उचो है घर्मेन करने योग्य है उन्टोंके आगे आठ
 ही आठ जोजनका मणिपिठ चानारा है उन्टोंके उपर महेन्द्र
 पर्व ६४ जोजनकी उची शोर भी छोटी छोटी विजय विज-
 यो-न पर्व है उन्टोंके आगे नन्दा पृष्कारणी दार्दी १०० जो-
 लार्दी ५० जो० चोर्दी १० जो० उर्दी अनेका कामल पामो-
 दीका मोग्ग पामर पर्व पर्व पर शोभनिक है। उन्दी दार्दी
 के पामो दिमा पामर दनगरे है मा मूल शिष्टायतनके एक
 दिमा के पदार्थ धारा है म्मे ही पामो दिर्जाते मामनना पद-
 पूर दिमाके दनगरेके ५५ ... मात्र आयतन ...
 पामोका पामर न पद ... है ...
 दिः ...
 ...

चार अञ्जनगिरि के अन्तरामे चार रतीगीरापर्वत हैं वह झडाइतो जोवन धरतिमे १००० जों० उचा सर्व स्थान हजार जोवन पदूला पलीक संस्थान है प्रत्यक रतीगीरापर्वत के चारों दिशामें चार चार राजधानीयों एवं १६ राजधानी हैं वह प्रत्यक राजधानी १००=०० जो० के विस्तारवाली हैं ३१६२२७।३।१२=।१३॥-१-१-१-६ भाभेरी परद्वि है पावर् राजधानीका वर्णन माफीक समझना जिस्मे इशान और नैऋत्यकोन रतीगीराके = राजधानीयों तो शक्रेन्द्र के अग्रमेहपियोंकी है और अग्नि और वायुकोन रतीगीराके = राजधानीयों इशानेन्द्र के अग्रमेहपियोंकी है नन्दीश्वर द्विप धारी हैं तब वह पर ठरती है अब नन्दीश्वर द्विपका सर्व पदार्थ कहते हैं ।

४ अञ्जनगिरिपर्वत अञ्जनगन्मय.

१६ दाधिमुखापर्वत अञ्जनमय.

३० कनकगिरिपर्वत कनकमय

५० जिनमन्दिर मंत्र व नीमय

६६५६ पावन मन्त्रमय व मन्त्र मन्त्र

२० = सुन्दरमन्त्र ... मन्त्रमय व मन्त्रमय

३० = प्रेरण मन्त्रमय

२०० = ५५५





- (२) मूलबीया—मूलमे बीज जैसे कन्दा मूलाके
- (३) पौरबीया—गाठ गाठमे बीज इक्षुआदिमे
- (४) खन्धबीया—गद्दू चीणादिमे

इन्ही वनास्पनिकायके उत्पन्न होनेका स्थान दोय ई

(१) स्थलमे (२) जलमे जिस्मेपेस्तर स्थलमे उत्पन्न होते हैं उन्हीका अधिकार लिखा जाते हैं.

पृथ्वीयोनिया वृक्ष पृथ्वीमे उत्पन्न होता है तब पेहला पृथ्वीकायके खग्धपुद्गलोंका आहार ले के अपना शरीर बन्धने है बादमे छे काया के जीवोंके मुकेलगे पुद्गलोंका आहार लेते है वह आहार अपने शरीरपणे परिणामाने हूवे शरीरका वर्ण गन्ध रस स्पर्श नाना प्रकारका होते है यह प्रथम अलापक हूवे । १ ।

पृथ्वीयोनिया वृक्ष मे वृत्त उत्पन्न होता है तब पेहले उत्पन्न स्थानक खन्धका आहार ले के अपना शरीर बन्धने है बादमे छे कायाके जीवोंके मुकेलगे पुद्गलोंका आहार ले के अपना शरीरक रस गन्ध रस स्पर्श नाना प्रकारका होते है । २ ।

वृत्त मे जीवोंके उत्पन्न होने के लिये तब पेहले अपने उत्पन्न स्थानके आहार ले के अपना शरीर बन्धने है बादमे छे कायाके जीवोंके मुकेलगे पुद्गलोंका आहार ले के अपना शरीरक रस गन्ध रस स्पर्श नाना प्रकारका होते है । ३ ।

त्रस स्थावर जीवोंका अचित तथा सचित शरीरमें अग्नि-
काय उत्पन्न हवे । ८८ । त्रसस्थावर योनिया अग्निमें अग्नि
उत्पन्न हवे । ८९ । अग्नियोनिया अग्निमें अग्नि उत्पन्न होती
है । ९० । अग्नि योनिया अग्निमें, त्रसस्थावर जीव उत्पन्न
होता है । ९१ ।

त्रसस्थावर जीवोंका सचित अनित शरीरमें वायुकाय
उत्पन्न होती है । ९२ । त्रसस्थावर योनिया वायुकायमें वायु-
काय उत्पन्न होती है । ९३ । वायु योनियावायुमें वायुकाय
उत्पन्न होती है । ९४ । वायु योनियावायुकायमें त्रस स्थावर
उत्पन्न होता है । ९५ ।

त्रस स्थावर जीवोंका सचित अचित शरीरमें पृथ्वीकाय
उत्पन्न होती है । ९६ । त्रस स्थावर योनिया पृथ्वीकायमें
पृथ्वीकाय उत्पन्न होती है । ९७ । पृथ्वी योनियापृथ्वीमें
पृथ्वीकाय उत्पन्न होती है । ९८ । पृथ्वी योनियापृथ्वीकायमें
त्रस स्थावर उत्पन्न होता है मये स्थानपर उत्पन्न होता है । वह
पेदलें अपने उत्पन्न स्थानके स्निग्धके पुट्टलोंका आहार लेता
है बादमें जे कायाके गरिर्गके मुकेनगे पुट्टलोंका आहार लेके
अपने गरिर्गका वन, गन्ध मय स्थाने नानाप्रकारके बनाते हैं ।

नागका कृमीय उत्पन्न होते हैं । १०० । देवता शय्यामें
उत्पन्न होते हैं । १०१ । इति आहार अन्नापक ।

हे भगवान्मनु यह उपर लिखत योनिमें परिभ्रमण करता
 मयना जीव मनादिफलमें मारा माना योनि है इन्ही योनि-
 की मीटानेवाला श्री श्रीनारायण का ध्यान है इन्हीकी मयदक
 मयतः मयाभना करो ताके पीर दुर्गदास योनिमें उल्लस
 होनाका कर्ता न हो । मनु ।

॥ त्रैलोक्ये त्रैलोक्ये नमो व शशाङ्क ॥

शोकटा नं. ६

(मनुस्मृति हृत.)

स० अ० आहारीक	७	३	३	६	६
स० पर्याप्त	७	१४	१४	१२	६
स० प० आहारीक	७	१४	१४	१२	६
स० प० अनाहारीक	१	२	१	२	१
पांचेन्द्रिय	४	१२	१५	१०	६
पा० अपर्याप्त	२	३	५	७	६
पा० अ० अनाहारीक	२	३	१	७	६
पा० अ० आहारीक	२	३	४	७	६
पं० पर्याप्त	२	१२	१४	१०	६
पां प० आहारीक	२	१२	१४	१०	३
चौरिन्द्रिमें	२	२	४	६	३
चौ० अपर्याप्त	१	२	३	६	३
चौ० अ० अनाहारीक	१	२	१	५	३
चौ० अ० आहारीक	१	२	२	६	३
चौ० पर्याप्त	०	०	२	४	३
चौ० प० आहारीक	१	१	२	४	३
तेडन्द्रिय	२	२	४	६	३
ते० अपर्याप्त	१	२	३	५	३
ते० अ० अनाहारीक	१	२	१	५	३
ते० अ० आहारीक	१	२	३	५	३

ते० पर्याप्ता	१	२	२	३	३
ते० प० आहारीक	१	१	२	३	३
चेन्द्रिय	२	२	४	५	३
वे० अपर्याप्ता	१	२	३	५	३
वे० अ० अनाहारीक	१	२	१	५	३
वे० अ० आहारीक	१	२	२	५	३
वे० पर्याप्ता	१	१	२	३	३
वे० प० आहारीक	१	१	२	३	३
एकेन्द्रिय	४	१	५	३	४
ए० अपर्याप्ता	२	१	३	३	४
ए० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	४
ए० अ० आहारीक	२	१	२	३	४
ए० पर्याप्ता	२	१	४	३	३
ए० प० आहारीक	२	१	४	३	३
अनन्द्रिय	५	२	५/७	२	१
अ० पर्याप्ता	५	२	५/७	२	१
अ० अनाहारीक	५	२	५	२	१
अ० आहारीक	५	२	५	२	१

॥ सर्वंभते सर्वंभते तमेव भजम् ॥

थोकडा नं. ७



(वहू श्रुतिकृत)

मार्गशा.	जी.	गु.	यो.	उ.	ले.
समुच्चय जीवमे	१४	१४	१५	१२	६
सकाय मे	१४	१४	१५	१२	६
स० अपर्याप्ता	७	३	५	६	६
स० अ० अनाहारीक	७	३	१	६	६
स० अ० आहारीक	७	३	४	६	६
स० पर्याप्ता	७	१४	१४	१२	६
स० प० अनाहारीक	१	२	१	२	१
स० प० आहारीक	७	१३	१४	१२	६
पृथ्वीकायमे	४	१	३	३	४
पृ० अपर्याप्ता	२	१	३	३	४
पृ० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	४
पृ० अ० आहारीक	२	१	२	३	४
पृ० पर्याप्तमे	२	१	१	३	३
पृ० प० आहारीक	२	१	१	३	३

व० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	६
व० अ० आहारीक	२	१	२	३	६
व० पर्याप्ता	२	१	१	३	५
व० प० आहारीक	२	१	१	३	५
तसक्यायमें	१०	१४	१५	१२	५
त० अपर्याप्ता	५	३	५	७	५
त० अ० अनाहारीक	५	३	१	७	५
त० अ० आहारीक	५	३	४	७	५
त० पर्याप्ता	५	१४	१४	१२	५
त० प० अनाहारीक	१	२	१	२	१
त० प० आहारीक	५	१३	१४	१२	६

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव मद्यम् ॥

थोकडा नं. =

थोकडा नम्बर. ६

—*∞*—
(बहुश्रुत कृत)

मार्गणा.	जी०	गु०	यो०	उ०	सं.
द्रव्यात्मा	१४	१४	१५	१२	६
कपायात्मा	१४	१०	१५	१०	६
योगात्मा	१४	१३	१५	१२	६
उपयोगात्मा	१४	१४	१५	१२	६
ज्ञानात्मा	६	१२	१५	३	६
दर्शनात्मा	१४	१४	१५	१२	६
चारिवात्मा	१	२	१५	३	६
वीयात्मा	१	१	१५	१२	६
गुणाक. निग्रन्थ	१	२	३	४	६
वृकश ..	१	२	३	४	६
प्रातमेवना .	१	२	३	४	६
कपायकुशील .	१	२	३	४	६
निग्रन्थ ..	१	२	३	४	६
म्नातक ..	१	२	३	४	६

थोकडा नं. १०



(घट्टश्रुति कृत.)

मार्गणा.	जी.	गु.	यो.	उ.	लौ.
ममुचप जीवमे	१४	१४	१५	१२	५
नारकीमें	३	४	११	६	३
ना० अपर्यासा	२	३	३	६	३
ना० अ० अनाशरीक	२	३	१	६	३
ना० अ० आहारीक	२	३	२	६	३
ना० पर्यासा	१	५	१०	६	३
ना० प० आहारीक	१	५	१०	६	३
तीर्थचमे	१	५	५	६	३
ना० अपर्यासा	१	३	३	६	३
ती० अ० आहारीक	१	३	४	५	३
ती० अ० आहारीक	१	३	५	६	३
ती० पर्यासा	१	३	५	६	३
ती० प० अपर्यासा	१	३	५	६	३
मनुष्यमे	१	३	५	६	३

मार्गणा.	जी०	गु०	यो०	उ०	ले०
मतिज्ञानके अलद्वियामे	१४	४	१३	८	६
श्रुतिज्ञानके "	१४	४	१३	८	६
अवधिज्ञानके "	१४	१४	१५	११	६
मनःपर्यवज्ञानके "	१४	१०	१५	११	६
केवलज्ञानके "	१४	१२	१५	१०	६
मतिअज्ञानके "	६	१२	१५	९	६
श्रुतिअज्ञानके "	६	१२	१५	९	६
विभंगाज्ञान "	१४	१४	१५	११	६
चक्षुदर्शनके "	१२	५	७	१०	१
अचक्षु० "	१	२	५/७	२	१
अवधिज्ञानके "	१४	१४	१५	१०	६
केवलदर्शन० "	१४	१४	१५	१०	६
इन्द्रियका "	१	२	५/७	२	५
आनेन्द्रियका	११	४	७	८	५
चक्षुइन्द्रियका	१	२	५/७	७	५
घ्राणन्द्रियका	७	३	७	७	५
गमन्द्रियका	१	३	७	५	५
स्पर्शन्द्रियका	१	२	५/७	२	१
अनेन्द्रियका	१	१०	१५	१०	६

कृष्णलेखा	१	८	१५	८	३
निललेखा	१	८	१५	८	३
कापोतलेखा	१	८	१५	८	३
तेजोलेखा	१	७	११	८	१
पद्मलेखा	१	७	११	८	१
शुक्रलेखा	१	१	०	२	०
अलेखा	१४	१३	१५	१२	६
संयोगिका	१	१	०	२	०
मनयोगिका	१	१	०	२	०
वचन०	१	१	०	२	०
काययोगि	१	१	०	२	०
अयोगि	१४	१३	१५	१२	६
सम्पत्कृती	१०	०	१३	६	६
मिथ्याकृती	६	१	१४	१	६
अथकृती	१०	१	१४	१०	६
सद्वृत्ति	१३	१	१०	८	१
असद्वृत्ति	०	१३	११	१०	६
सम्पत्कृती	०	०	०	२	०

॥ सशक्त संवसने तमेव मद्यम् ॥

समचारसंस्थान	२	१४	१५	१२	६
निग्रोधसंस्थान	२	१४	१५	१२	६
मादियमंस्थान	२	१४	१५	१२	६
वामन संस्थान	२	१४	१५	१२	६
कृम्भ संस्थान	२	१४	१५	१२	६
हृन्दक संस्थान	१४	१४	१५	१२	६
सावचीया (सिद्ध)	०	०	०	२	०
सौवचीया (भव्य)	१४	१४	१५	१२	६
सा० सो (पटवाइ)	१४	१४	१५	१२	६
नि० नि० (अमव्य)	१४	१	१३	६	६
अध्वदमस्थ	१	२	५१७	२	१
अकेवली	१४	१२	१५	१०	६
असिद्ध	१४	१४	१५	१२	६
सचितयोनि	१२	२	६	६	४
अचितयोनि	१४	४	१३	६	६
मिश्रयोनि	१४	०	१३	६	६
शीतयोनिमे	१२	२	६	६	४
उष्णयोनिमे	२	१	३	३	३
मिश्रयोनिमे	२	४	१३	६	६
संवृतयोनिमे	०	६	१३	६	६

शोकडा नम्बर. १३

—५०७३—

(बहुश्रुत कृत)

मार्गणा	जी.	गु.	यो.	उ.	ले.
पामुदेवकी आगति	१	४	१०	३	४
हारयादि सम्यक् द्रीष्टी	६	६	१५	७	६
अवती मनयोगमें	१	३	१२	३	६
एकान्तमंत्री सम्य० अवती	२	२	१३	३	६
अप्रमत्त हारयादिमें	१	२	११	७	३
तेजालेशी एकेन्द्रिमें	१	१	३	३	१
अमर गुणस्थानमें	४	३	१२	१२	६
अमर गु० छद्मस्थ	१	२	१०	१०	६
अमर गु० चमरान्त	१	२	१२	३	६
यथाज्ञात संयोग	१	३	११	३	१
गुण० चमरान्त	१५	३	१३	३	६
संयोग गु० चमरान्त	१४	३	१३	३	६
छद्मस्थ गु० च.	१०	३	१३	१०	६



थोकडा नं. १४



(बहुश्रुत कृत) .

(२८ लब्धि)		भव्य		अभव्य	
मार्गणा.		पुरुष	मि	पुरुष	मि
आमोमहि	लब्धि	हृवे	हृवे	हृवे	हृवे
विप्योमहि	"	"	"	"	"
जलोमाहि	"	"	"	"	"
मेलोमाहि	"	"	"	"	"
मव्यामाहि	"	"	"	"	"
मांमद्यथाता	"	"	नदी	नदी	नदी
असविज्ञान			हृवे	"	"
श्रु जायति			"	"	"
विपुलमात			"	"	"
कवन्तान			"	"	"
वमन			नदी	"	"
अग्नि			"	"	"

(५) कालापेक्षा वादर पुद्गलपरावर्तन—बीस कोडा-कोड सागरोपमका एक कालचक्र होता है उन्हीका समय असंख्याते है एक कालचक्रके पहला समयमें जीव जन्ममरण कीया फीर दुसरा कालचक्रके पहला समयमें जन्ममरण करे वह गीनतीमें नहीं परंतु अन्य अस्पर्श समयके अन्दर जन्ममरण करे वह गीनतीमें आवे इसी भाँतीक जन्ममरण करते करते सम्पुरण कालचक्रके सर्व समयोंपर जन्ममरण करे उन्हीकों कालापेक्षा वादर पुद्गलपरावर्तन केहते है । उन्हीमें भी काल अनन्त पुरण होते है ।

(६) कालापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन—पूर्वोक्त कालचक्रके प्रथम समय जन्ममरण कीया और दूसरे कालचक्रके दूसरे समय जन्ममरण करे तो गीनतीमें शेष समयमें जन्ममरण करे तो गीनतीमें नहीं इसी भाँतीक तीसरा कालचक्रका तीसरा समयमें चौथा कालचक्रके चौथा समयमें एवं क्रमःपर समयमें जन्ममरण करे तो गीनतीमें आवे किन्तु अन्त में अन्य समयमें जन्ममरण करे तो सब भाँतीक जन्ममरण करे उन्हीकों कालापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन केहते है वादरमें मन्मका काल अनन्तगुणा लगता है ।

(७) नाशपना वादर पुद्गलपरावर्तन — हरीके अनु-

अंगुल एक यव एक युक्त एक लिख छे बालाग्र पांच व्यव-
हारीया परमाणु इतनी परादि है दश हजार जोजनका उंडा
उन्ही पालाके आठ जोजनकी जगती । जगतके उपर आदा
जोजनकी वेदिका है गोल आकार अर्थात् घान्यवरणके
पाइलीके आकार पाला होते हैं ।



अनवस्थित पालो केइनेका मतलब यह है कि जिन्होंकी
एक स्थित नहीं है वह आंग चलके बनलाया जावेगा ।

अनवस्थित पालो एक लघु योजनके विस्तारवालाको
मरम्बके दाखोंमें पुरग्न बरे कि फीर जिम्के उपर एक दाखा
नहीं ठेर सके । उन्ही भरे हवे पालेको कोइ देवना हाथके
अन्दर लेके एक मरम्ब दाणा द्विपमें एक ममुट्टमें नाम्बतों
नाम्बतों चला जावे जहाँक वह पाला म्यानी न हो जावे,

पालाका चरमदाना जीस द्विपमें या समुद्रमें डाला है वहां अनवस्थित पाला जीस द्विप या समुद्रमें पीलकुल खाली हो गया है उन्ही द्विप या समुद्र जीतना लम्बा चोडा विस्तारवाला और दश हजार जोजनका उंडा आठ जोजनकि जगती आदा जोजनकि वेदिकावाला पाला बनाके सरसवके दानोंसे भरे फीर वहांसे उठाके आगेके द्विप समुद्रमें एकेक दाना डालते डालते चला जावे जहांतककि वह पाला खाली न हो अर्थात् उन्ही पालामें शेष एक दाना रहे वहांपर उन्ही पालाको छोडदे और जो एक दाना रहा था उन्हीको शीलाक नामका पालामें डालदे । कारणकि जो पहले लक्ष जोजन परिमाणवाला पाला था उन्हीका परिमाण हो जानेके कारण पहला दाना नहीं डाला था परंतु दुसरे दफे अनवस्थित होनेसे चरमदान डाला गया है ।

जिस द्विप या समुद्रमें अनवस्थित पाला था उन्ही द्विप या समुद्र जीतने विस्तारवाला (उंडा आठ जोजनका उंडा आठ जोजनकि जगती आदा जोजनकि वेदिका पहलेवत) पाला बनावे वह सरसवसे भरे फीर द्विप समुद्रमें एकेक दाना डालते डालते चला जावे जहांतककि वह पाला खाली न हो अर्थात् उन्ही पालामें शेष एक दाना रहे वहांपर उन्ही पालाको छोडदे और जो एक दाना रहा था उन्हीको शीलाक नामका पालामें डालदे । कारणकि जो पहले लक्ष जोजन परिमाणवाला पाला था उन्हीका परिमाण हो जानेके कारण पहला दाना नहीं डाला था परंतु दुसरे दफे अनवस्थित होनेसे चरमदान डाला गया है ।

चरमदाना रहे वह लेके शीलाक पालामें डालदे तब शीलाक पालामें तीन दाने जमा हवे । जिस द्विप वा समुद्रमें अनवस्थित पाला खाली हवा था उन्ही द्विप वा समुद्र जितना विस्तारवाला पाला बनाके सरसवके दानासे भरके आगेका द्विप समुद्रमें एकेक दाना डालते डालते चला जावे शेष चरमका दाना शीलाक पालामें डाले तब शीलाकपालामें चार दाने जमा हूवे । इमीमाफीक अनवस्थित पाला कि नवीनवी अवस्था होते एकेक दाना शीलाकमे डालते डालते लक्ष जोजनके विस्तारवाला शीलाकपाल भी समपुरण भरा जावे तब अनवस्थित पालाको जहाँ खाली हवा है वहाही छोड दे और शीलाकपालको हाथमे ले के एकदाना द्विपमे एकदाना समुद्रमे डालते डालते शेष एकदाना रहे वह प्रतिशीलाकमे डाल देना अर्थात् शीलाक खाली पडा है पीछा अनवस्थितका पाला जो कि शीलाकका चरमदाना जिस द्विप वा समुद्रमे पडाथा उन्ही द्विप वा समुद्र जितना अनवस्थित पाला बनाके सरसवके दानासे भरके द्विप समुद्रमे डालता जावे शेष एक दाना रहे वह फीरमें शीलाकपालामें डाले एकेक दाना डाल के पेटले कि माफीक शीलाकको भग्टे फीर शीलाक को उठाके एकेक दाना द्विप वा समुद्रमें डालते डालते शेष एक दाना रहे वह प्रतिशीलाकमे डाले तब प्रति-शीलाकमे दो दाना जमा हूवे फीर अनवस्थित पालामे एकेक

दाना डालके शीलाक पालाको भरे और शीलकके एकेक
 दाना प्रतिशीलाकमे डालते जावे इसीमाफीक करते करते
 प्रतिशीलक पाला लक्ष जोजनके परिमाण वाला भी सीखा
 सहित भरा जावे तब अनवस्थित और शीलाक दोनोको
 छोडके प्रतिशीलाकको हाथमे लेके एक दाना द्विपमे एक दाना
 समुद्रमे डालते डालते शेष एक दाना रहे वह महा शीलाकमे
 डलदेना जीत द्विपमे प्रतिशीलाक पाला खाली हुआ है इतना
 विस्तारवाला और भी अनवस्थितपाला बनाके सरसवसे भरके
 आगेके द्विप समुद्रमे एकेक दाना डालता जावे पूर्ववत् अनव-
 स्थितपालासे शीलाकपालाको एकेक दानासे भरदे और शीलाक
 भरा जावे तब शीलाकसे प्रतिशीलाक भरदे और प्रति शीलाक
 पालासे पूर्ववत् एकेक दाना डालते डालते महाशीकको भरदे
 आगे पांचमो कोइ भी पाला नहीं है इसी वास्ते महाशीलाक
 पाला भरा हुआ ही रहेना देवे और पीछले जो अनवस्थित
 पालामे शीलाक भर देवे और शीलाक पालामे प्रतिशीलाक भरदे
 प्रतिशीलाक खाली करनेको अब महार्शीलाकपालामे
 दाना समावेश नही हो जाता है वास्ते पार्श्वशीलाक
 भी भरा हुआ रहे और अनवस्थित पालामे शीलाक
 पाला भर देवे आगे प्रति शीलाकमे दाना समावेश हो नही
 शके इसी वास्ते शीलाक पाला भी भरा हुआ रहे और अन-
 वस्थित पाला भरा हुआ है वह शीलाक पालामे दाना समावेश

हो नहीं शके वास्ते अनवस्थित पाला भी भरा हुआ रहे इसी माफीक च्यारो पाला भरा हुआ है अब जो पीछे द्विप समुद्रमें सरसबके दाना डाला था उन्ही सर्व दोनोंको एकत्र कर एक रासी बनावे उन्ही रासीके अन्दर पूर्व भरे हुवे च्यारों पालोंके सरसब दाने मीला देवे उन्ही रासीके अन्दरसे एक दाना निकलकर शेष रासी है वह उत्कृष्ट संख्याते है अर्थात् दोय दानोंको जघन्य संख्याते कहैते है और पूर्व जो बतलाये हूवे तीन पालोंसे द्विप समुद्रमें सरसबके दाने और च्यार पाले भरे हुवे दानोंको मीलाके एक रासी करे तीन दानोंसे लगाके उन्ही रासीमें दो दाना कम हो यहाँतक मध्यम संख्याते होते है और रासीमें एक दाना कम होना उन्हीको उत्कृष्ट संख्याते कहे जाते है और वह रहा हुआ एक दाना रासीमें मीलादे अर्थात् ममपुग्ग रासीको जघन्य प्रत्येक असंख्याते कहने है अर्थात् पहला डाले हुवे द्विप समुद्रके सर्व मरमव एकत्र करके भरे हुवे च्यारों पालोंके मरमव भी माघमें मीलाके मयकी एक रासी बनादे उन्ही रासीको जघन्य प्रत्येक असंख्याते कहने है और उन्ही रासीमें मरमवका एक दाना निकाल लेवे तब शेष रासीको उत्कृष्ट संख्याते कहते है अगर दो दाना रासीमें निकाल लेवे तब शेष रासीको मध्यम संख्याते कहते है ।

प्रत्येक जघन्य असंख्यातिके जो रासी हैं उन्हींको रासी अभ्यास करे यथा-कोई आचार्योका मत्त है कि जितना दाना रासीमें है उन्हींको उतना गुणा करना जैसे कल्पनाकि रासीमें १०० दाना हो तो सोको सोगुणा करनेसे १०००० होता है । दुसरा आचार्योका मत्त है कि रासीमें जितने दाने हैं उन्हींको उतनीवार गुणा करना जैसे रासीमें १० दानोंकि कल्पना कि जाय ।

१—१—१—१—१—१—१—१—१—१
 १०—१०—१०—१०—१०—१०—१०—१०—१०—१०

- (१) १०० प्रथम दशको दशगुणा करवों.
- (२) १००० सोको दशगुणा.
- (३) १०००० हजारको दशगुणा.
- (४) १००००० दशहजारको दशगुणा
- (५) १०००००० लखको दशगुणा
- (६) १००००००० पूर्वको दशगुणा
- (७) १०००००००० " " " "
- (८) १००००००००० " " " "
- (९) १०००००००००० " " " "
- (१०) १०००००००००००० " " " "

यह तो कल्पनाकि रमी है परन्तु जो जघन्य प्रत्येका

संख्याते कि रासकों इसीमात्रिक असंख्याते वार गुये करतों जो रासी आवे उन्हीकों जघन्य युक्ता असंख्याते केहेवे है अगर उन्ही रासीसे दो दाने निकाल के फीर रासीकी पृच्छा करे तो वह दो दाने कम कीये हइ रासी मध्यम प्रत्येक असंख्याते है अगर उन्ही रासीमें एक दाना डालके पृच्छा करे तो उत्कृष्ट प्रत्येक असंख्याते है और दुसरा दाना डाल दे तो जघन्य युक्ता असंख्याते होते है । (एक आविलका के समय परिमाण)

जघन्य युक्ता असंख्याते कि जो रासी है उन्हीकों पूर्ववत् रासी अभ्यासकर रासीमें दो दाने निकालके पृच्छा करतों वह रासी मध्यम युक्ता असंख्याते है अगर एक दाना डालके पृच्छा करते उत्कृष्ट युक्ता असंख्याते है और रहा हवा एक दाना डालके पृच्छा करे तो जघन्य असंख्याते असंख्याता होते है.

जघन्यासंख्याते असंख्यः कि रासीको रासी अभ्यास पूर्ववत् करे उन्ही रासीमें दो दाना निकालके पृच्छा करे तो शेष रासी मध्यमासंख्याते असंख्यात है एक दाना रासीमें मिला दे तो उत्कृष्ट असंख्याते असंख्यात होता है और दुसरा दाना जो मिला दे तो जघन्य प्रत्येक अनन्ता होता है.

जघन्य प्रत्येक अनन्ता कि रासीको पूर्ववत् रासी अभ्यास करे उन्ही रासीमें दो दाना निकालके शेष रासी कि



